साल 6 बेमिसाल
सामाजिक गतिविधियों का लेखा जोखा
सबसे पहले सबसे तेज

मासिक

# कुमावत इंडिया

कुमावत प्रगति ट्रस्ट की सामाजिक पत्रिका

Email : kumawatindiapatrika@gmail.com
Website : www.kumawatindiapatrika.in

वर्ष-7 | अंक-8 मार्च-2024 पृष्ठ-28 मूल्य : ₹ 20.00

DPS AJMER
Sr. Sec. School
Tabiji Farm Road, Ajmer
ESTABLISHING
The Right Environment
We believe in building a modern culture using both traditional & next-generation tools. So, your child's natural talents can blossom.
SHASHI PAL KUMAWAT
Chairman
Archery & International
Level Shooting Range
Swimming Pool
"DPS Wave Pulse"
Horse Riding Club
Won Laurels at the National Level
Our Activities
Skating Rink
Karate Club
We have won Karate Championship at District, State & National Level.
Art & Craft
Tabiji Farm Road, Near D.D. Puram, Beawar Road, Ajmer
Web: www.dpsajmer.in
E-Mail: info@dpsajmer.in

## कुमावत प्रगति ट्रस्ट

**पता : एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018**

| | | | |
|---|---|---|---|
| **संरक्षक** | : | जयकिशन सोकिल | **मो. 9829125428** |
| **अध्यक्ष** | : | रामप्रकाश कुमावत एडवोकेट | **मो. 9887440666** |
| **उपाध्यक्ष** | : | रामप्रकाश कुमावत (मारवाल) | **मो. 9414074376** |
| **सचिव** | : | श्रीमती भारती तोंदवाल | **मो. 9414810584** |
| **कोषाध्यक्ष** | : | लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल | **मो. 9549656438** |
| **सदस्य ट्रस्टी** | : | सी.एम. कुमावत (बड़ीवाल) | **मो. 9829056063** |
| | | रमेश कुमावत (गेदर) | **मो. 9414554322** |
| | | चेतन बालोदिया | **मो. 9414052736** |
| | | मोहन लाल कुमावत | **मो. 9887557425** |
| **मुख्य सलाहकार** | : | सुरेन्द्र कुमार वर्मा (नागा) | **मो. 9414994006** |
| **सलाहकार** | : | गिरधारी लाल सिंघनवाल | **मो. 9414263429** |

**सम्पादक मण्डल :** रमेश चन्द कुमावत (गैदर) सम्पादक -9414554322, जयसिंह गुड़ीवाल सह-सम्पादक 9461343432, मनीष कुमावत 9660702083, रमेश तोंदवाल 9460870125 रवि कुमावत 9829600411, लक्ष्मीनारायण सिरस्वा 9829791846, उर्वशी बालोदिया 9351680888, प्रिया मारवाल 9408093778 **पदेन सदस्य :** अध्यक्ष, सचिव एवं प्रकाशक।

**व्यवस्थापक मण्डल :** महेश चन्द जलान्धरा 9828118789, लालचन्द धुंधारिया 9413335998, सुरेन्द्र मारोठिया 9314820385, राजेश धुंधारिया 9314506330, राजेश कुमावत (मरोडिया) 9829097496, अशोक कुमावत -9352070394, श्रीमती शशि कला बालोदिया, मुकेश कारगवाल 9828606056 व राजसिंह बधानिया 9414238799 **उप-कोषाध्यक्ष :** खेमचंद खड़गटा 9829140629 **विधि सलाहकार :** राकेश कुमावत एडवोकेट 9829152561 विशेष आमंत्रित सदस्य : मनोज सिरस्वा।

**पत्रिका सहयोगी :**

**छत्तीसगढ़ :** रमेश कुमार तुनवाल **मो. 9425234397** **दिल्ली :** राधेश्याम घासोलिया **मो. 9818711580** **सूरत :** शुभकरण किरोड़ीवाल **मो. 9898097444** **वापी :** कृष्णगोपाल **मो. 9824892299** **मुम्बई :** विजय किरोड़ीवाल, **मो. 9867177188** **जींद (हरियाणा) :** बलवीर सिंह वर्मा **मो. 9355322301** **कोटा :** चन्द्र प्रकाश कांकर **मो. 9214983402** **सीकर :** रामगोपाल भोड़ीवाल **मो. 9610784657** **उदयपुर :** घनश्याम पटवा **मो. 9460913044,** जगदीश मामोडिया **मो. 9024805687** **ब्यावर :** नरेन्द्र आर्य **मो. 8107944493,** रवि बेडवाल **मो. 8290303003** **बगरू :** चेनसुख बड़ीवाल **मो. 9929012957** **सांगानेर :** सोहनलाल अजमेरा **मो. 9636860812** **इंदौर :** नेमीचंद कारवाल **मो. 9993998645** **किशनगढ़ :** प्रभुदयाल तुनगरिया **9680931428**

**सदस्यता शुल्क रु. : विशिष्ट संरक्षक- 5000, संरक्षक-3000, 10 वर्षीय-1300 एवं 5 वर्षीय-650**

**विज्ञापन दरें : अंतिम कवर पृष्ठ-3500, कवर पृष्ठ अन्दर, 3000, अन्दर 1 पृष्ठ-2500, 1/2 पृष्ठ-1300, 1/4 पृष्ठ-700**

**नोट 1 :** संरक्षक सदस्य को आजीवन (25 वर्ष) तक पत्रिका प्रेषित व 1 बार मय फोटो परिचय प्रकाशन, विशिष्ट संरक्षक का आजीवन पत्रिका व प्रत्येक अंक में 10 वर्ष तक नाम का प्रकाशन।

**नोट 2.** 12 विज्ञापन निरन्तर देने पर 2 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किये जायेंगे। 6 विज्ञापन निरन्तर देने पर 1 विज्ञापन नि:शुल्क प्रकाशित किया जायेगा।

**बैंक खाता : कुमावत प्रगति ट्रस्ट, संख्या 13850110020562 यूको बैंक, गांधी सर्किल, जयपुर, IFS Code : UCBA0001385** यदि राशि सीधे बैंक खाते में स्लिप/ऑनलाइन जमा कराई गई है तो कृपया व्हाट्सएप नं. 9549656438 पर रसीद प्रेषित करें।


**स्वत्वाधिकार :** कुमावत प्रगति ट्रस्ट के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी.एम. कुमावत द्वारा राज ब्लॉक्स, बी-81, करतारपुरा इण्डस्ट्रीयल एरिया, 22 गोदाम, जयपुर से मुद्रित एवं एफ-31-ए, एस.एल. मार्ग, लालबहादुर नगर प., दुर्गापुरा, जयपुर-302018 से प्रकाशित, सम्पादक रमेश चंद कुमावत।

## सम्पादकीय

भारतीय संस्कृति में मौसम तथा कृषि उपज के अनुरूप वर्षभर अनेक त्योहारों का समावेश किया गया है। इनसे उल्लास व उमंग का माहौल रहता था। लोग मिलजुल कर त्योहार मनाते थे, न गरीब-अमीर का भेद था न धर्म व जाति का। एक गांव व मोहल्ले के सभी लोग मर्यादा में रहकर खुशी-खुशी रहते थे तथा त्योहार मनाने का आनन्द भी तब अलग ही था। लोग सादगी से त्योहार मना कर आनन्दित होते थे।

बसंत ऋतु की समाप्ति पर फाल्गुन माह में होली का त्योहार आता है। होली का डांडा एक माह पहले से ही गांव के बाहर या चौराहे के बीच रोपकर होली का आगाज कर दिया जाता है तथा ढप व चंग की थाप तथा होली का गान प्रारम्भ हो जाता है। सभी लोग होली दहन के दिन तक अपने यहां से वेस्ट लकड़ियां, घास-भूस, बड़कुले, कण्डे आदि जलाऊ सामग्रियां लाते हैं, जो इस त्योहार को सामुहिकता से मनाने का प्रतीक है। निश्चित मुहुर्त में सभी मिलकर होली का दहन करते हैं। इसकी अग्नि में लोग गेहूँ की बालियां व छोले सेककर लाते हैं, इसका आशय है कि नई फसल का अग्नि के माध्यम से भगवान को भोग लगाना। होली की अग्नि को घर लाकर वर्षभर उसी से चूल्हा जलाने की भी प्राचीन परम्परा रही है। अगले दिन रंगों का त्योहार मनाया जाता है। लोग टोली बनाकर एक-दूसरे के जाते हैं व रंग-अबीर लगाकर होली खेलते हैं। वहां होली की मिठाई, ठण्डाई आदि का आनन्द लिया जाता है। बच्चों की तो इस दिन अलग ही मौज होती है।

इस समय मौसम में बदलाव होता है तथा अनेक लोग इसकी चपेट में आकर जुखाम-बुखार से पीड़ित हो जाते हैं। इस बदलाव का आप सभी ध्यान रखें। **ठण्डे पदार्थ जैसे आईसक्रीम, कुल्फी, कोल्डड्रिंक्स तथा फ्रीज के पानी का उपभोग नहीं करें,** हो सके तो इन वस्तुओं को घर में नहीं लाये। इस मौसम में बच्चों का विशेष ध्यान रखें।

मार्च में जहां होली आती है वहीं बोर्ड की परीक्षाएं भी होती हैं। ऐसे में बच्चे स्वस्थ रहें और तनावरहित रहकर परीक्षाओं की तैयारी करके परीक्षा दें, इसका अभिभावकगण ध्यान रखें। बच्चों को पानी व रंगों से होली खेलना पसंद होता है, हम उन्हें नहीं रोकें पर वे कहीं ज्यादा समय भीगे न रहे तो ही ठीक है। होली पर हम बाहर से मिठाई व खाद्य सामग्री ले आते हैं। **त्योहारों पर नकली मावा (खोआ) व पनीर की आवक ज्यादा होती है। इसलिए घर पर ही देशी पकवान बनाएं व उसका ठण्डाई के साथ आनन्द लें।** होली पर अपने रिश्तेदारों एवं मित्रों से अवश्य मिलें तथा गांव जाकर अपने बुजुर्ग माता-पिता से अपने बच्चों को मिलाएं, इससे बुजुर्गों व बच्चों दोनों को खुशी मिलेगी।

होली के बाद गणगौर तथा रामनवमी का त्योहार भी शीघ्र ही आ रहा है। युवतियों एवं महिलाओं के लिए गणगौर का विशेष महत्व है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम कुमावत समाज के देवता माने जाते हैं। आइए हम रामजन्मोत्सव के अवसर पर श्रीराम की पूजा-अर्चना व आरती करें तथा मंदिर जाकर उनके समक्ष शीश नवाएं।

आप सभी को **'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से आगामी त्योहार **होली**, **गणगौर** व **रामनवमी** की हार्दिक बधाई।

**- रमेश चन्द कुमावत**

हमारी वेबसाइट www.kumawatindiapatrika.in पर आप 'कुमावत इंडिया' पत्रिका के पिछले अंक व अन्य विवरण देख सकते हैं।


| | |
|---|---|
| सम्पादकीय | 3 |
| 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से होली पर अपील | 4 |
| भारती वर्मा का 'कुमावत इंडिया' ने किया सम्मान | 5 |
| 'ए मोहब्बत जिन्दाबाद' 7 अप्रेल को | 5 |
| गरिमा कुमावत ललित स्मृति अवार्ड से सम्मानित | 5 |
| पवन ने 205 किलो वजन उठाकर वर्ल्ड चैम्पियनशिप के लिए क्वालिफाई किया | 5 |
| थैलेसीमिया की बीमारी से पीड़ित बच्चों के लिये रक्तदान | 6 |
| सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा विद्याधर नगर इकाई की मीटिंग आयोजित | 6 |
| फागोत्सव गुणगान मेरे श्याम का सम्पन्न | 6 |
| अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं का सम्मान | 6 |
| कुमावत समाज तेलंगाना के चुनाव | 7 |
| तिरूपति कुमावत समाज सेवा संघ का गठन | 7 |
| अणतपुरा मीडिया प्रभारी पर मोना कुमावत नियुक्त | 7 |
| भारती वर्मा जनप्रहरी ने दिया सुझाव | 7 |
| स्नेहा का चयन राजस्थान हॉकी टीम में | 7 |
| अमरचन्द मण्डावरा सहप्रभारी नियुक्त | 7 |
| ब्यावर में सामुहिक विवाह सम्पन्न | 8 |
| नियमित ध्यान एवं परोपकारिता की भावना प्रसन्नता का ख़ज़ाना | 8 |
| हिंदू नववर्ष विक्रम संवत 2081 पिङ्गल के नाम से जाना जाएगा | 8 |
| राम भारत के आधार | 9 |
| रामनवमी पर रामलला को 'सूर्य तिलक' | 9 |
| पालक-कोफ्ता-करी सब्जी | 10 |
| रामायण की महिमा | 10 |
| वाणी के संयम की महिमा | 11 |
| असली समस्या क्या ? | 11 |
| फास्ट फूड खाने के दुष्परिणाम | 12 |
| कभी लगता है...जिन्दगी... | 12 |
| रामचरित मानस जो आईने से ही पढ़ी जा सकती है | 12 |
| जीवन का उद्देश्य दूसरों की मदद करना | 13 |
| ब्रज की होली | 13 |
| बच्चों को दें संस्कारों की सौगात | 14 |
| गणगौर : जीवन के उल्लास का पर्व | 15 |
| होली ड्ढ्र/ह्य बॉलीवुड | 17 |
| गुरु नानक देव जी | 18 |
| रंगों का पर्व होली-2024 | 19 |
| कुमावत समाज चेन्नई के चुनाव सम्पन्न | 19 |
| विशिष्ठ संरक्षक सूची व श्रद्धांजलि | 20 |
| विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची | 21 |
| आवश्यक सूचनाएं व पत्रित्रका नहीं मिलने परसम्पर्क सूत्र | 22 |
| विज्ञापन | 23 |
| बधाई विज्ञापन | 24 |
| श्रद्धांजलि | 25 |
| विज्ञापन | 26 |


## 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से होली पर अपील

होली पर नकली मावे तथा पनीर से बनी मिठाइयां हमारी सेहत को नुकसान पहुंचा सकती है। साथ ही कैमिकल रंगों के उपयोग से जहां त्वचा पर गहरा रंग चढ़ जाता है वहीं त्वचा रूखी व खराब हो जाती है तथा रंगों से एलर्जी होना भी स्वाभाविक है।

हमारी अपील है कि आप होली का त्योहार परम्परागत रूप से तथा सादगी के साथ सामुहिकता से मनाए। घर बनी मिठाइयों का उपयोग करें जिससे बीमार होने का खतरा नहीं रहे। होली को ऑर्गेनिक रंग व अबीर या फूलों के साथ मनाए तो इसका आनन्द अधिक होगा। होली हमारी संस्कृति से जुड़ा त्योहार है इसका बच्चों को भी आनन्द लेने दें। हमारी संस्कृति से हम आगामी पीढ़ी को अवगत करा पाएंगे जिससे कि आगे भी हमारे ये त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाए जाते रहें।

**श्रीमती भारती वर्मा** धर्मपत्नी श्री रमेश तोंदवाल
'कुमावत इंडिया' पत्रिका की सचिव
कुमावत क्षत्रिय विकास समिति, मालवीय नगर, जयपुर की अध्यक्ष
सर्वकुमावत क्षत्रिय महासभा रजि. की प्रदेश महिला अध्यक्ष
को
**अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी (मानवाधिकार संगठन)**
की
**जिला महिला अध्यक्ष जयपुर ग्रामीण**
नियुक्त किए जाने पर **हार्दिक बधाई।**
**'कुमावत इंडिया' पत्रिका परिवार**

## भारती वर्मा का 'कुमावत इंडिया' ने किया सम्मान

'**कुमावत इंडिया**' पत्रिका की सचिव भारती वर्मा (तोंदवाल) को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (मानवाधिकार संगठन) का जिलाध्यक्ष जयपुर ग्रामीण बनाये जाने पर 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की कार्यकारिणी द्वारा उन्हें पुष्पगुच्छ देकर बधाई दी व सम्मानित किया।

*मोहन बालोदिया का शो*

## 'ए मोहब्बत जिन्दाबाद' 7 अप्रेल को

बॉलिवुड गोल्डन एरा 1960-90 के सदाबहार गानों की म्यूजिकल नाइट '**ए मोहब्बत जिन्दाबाद**' का आयोजन बालोदिया डायमंड आर्केस्ट्रा के गायक मोहन बालोदिया द्वारा 7 अप्रेल 2024 को महाराणा प्रताप आडिटोरियम, विद्या आश्रम स्कूल, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर में किया जायेगा।

ये इनका 114 वां शो होगा, जिसमें 5 पुरुष व 5 महिला आर्टिस्ट अपनी म्यूजिकल प्रस्तुति दे कर संगीत प्रेमियों का मनोरंजन करेंगे।

## गरिमा कुमावत ललित स्मृति अवार्ड से सम्मानित

इस वर्ष का 'ललित स्मृति अवार्ड' लोकप्रिय युवा गायिका 'डॉ. गरिमा कुमावत' को दिया जाएगा। अवार्ड के दौरान डॉ. गरिमा की एक गीत प्रस्तुति भी होगी। डॉ. गरिमा कुमावत ने भारतीय शास्त्रीय संगीत में अपनी पहचान कायम की है। आप बाल्यावस्था से ही गायन की तालीम गुरु शिष्य परंपरा से प्राप्त कर रही हैं। आपके गुरु डॉ. पंडित हनुमान सहाय जो गायकी के क्षेत्र में जाना माना नाम है। राजस्थान विश्वविद्यालय से Master of Music की उपाधि लेने के पश्चात आपने मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय से पीएच.डी की उपाधि 2017 में प्राप्त की है। आपकी गायकी में जयपुर घराने के गायन की झलक साफ नजर आती है। शास्त्रीय संगीत की प्रस्तुतियों हेतु 2011 में आपको चीन के बीजिंग व शंघाई में आमंत्रित किया गया। आपकी एक पुस्तक '**स्वर रा मोती**' आपके दादा गुरु पंडित चिरंजीलाल तंवर पर प्रकाशित हो चुकी है।

## पवन ने 205 किलो वजन उठाकर वर्ल्ड चैम्पियनशिप के लिए क्वालिफाई किया

10 मार्च को उदयपुर में आयोजित राज्य स्तरीय स्ट्रैन्थ लिफ्टिंग व इन्क्लाइन बैंच पर्श प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें 76 किलो भार वर्ग में पवन कुमावत ने 205 किलो वजन उठाकर गोल्ड मैडल जीता। पवन ने 16-21 जुलाई, 2024 को कजाकिस्तान में हो रही वर्ल्ड स्ट्रैन्थ लिफ्टिंग चैम्पियनशिप-2024 के लिए क्वालिफाई भी किया।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से पवन कुमावत को बधाई तथा आगामी प्रतियोगिता में विजयी होने के लिए शुभकामनाएं।

## थैलेसीमिया की बीमारी से पीड़ित बच्चों के लिये रक्तदान

25 फ़रवरी को अजमेर रीजन थैलेसीमिया वेलफ़ेयर सोसायटी रजि. के द्वारा किशनगढ में स्वैच्छिक रक्तदान शिविर किया। जिसमें 130 सदस्यों ने रक्तदान किया। इसमें मदनगंज किशनगढ़ पतंजलि योग समिति, 'सुबह के साथी' ग्रुप के 20 सदस्यों ने भी थैलेसीमिया की बीमारी से पीड़ित बच्चों के लिये मानवता के हित में रक्तदान किया।

इसके लिए पतंजलि योग समिति के तहसील प्रभारी प्रभुदयाल कुमावत (तूनगरिया), पतंजलि युवा भारत किशनगढ़ तहसील प्रभारी राजकुमार मेघानी तथा युवा सह प्रभारी विशाल दूधानी ने रक्तदान करने के लाभ बताते हुये प्रेरित करके रक्तदान कराया।

## सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा विद्याधर नगर इकाई की मीटिंग आयोजित

03 मार्च 2024 को दादूद्वारा बगीची, कुमावत कॉलोनी, झोटवाड़ा, जयपुर में सर्व कुमावत क्षत्रिय महासभा रजि. विद्याधर नगर इकाई की मीटिंग आयोजित की गई जिसमें नए सक्रिय सदस्यों का स्वागत किया गया। मीटिंग में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामेश्वर जी बंबोरिया, विमल जी अनावडिया, रूपसिंह जी कारगवाल, जय प्रकाश सिरोहिया, प्रेमजी वकील साहब एवं नंदकिशोर जी उपस्थित रहे। मीटिंग के बाद स्नेह भोज का भी आयोजन हुआ।

## फागोत्सव गुणगान मेरे श्याम का सम्पन्न

17 मार्च, 2024 जयपुर। अखण्ड कुमावत नारी युवा शक्ति तथा श्री श्याम चरण सेवा परिवार के तत्वावधान में बाबुल पैराडाइज न्यू सांगानेर रोड में फाग '**गुणगान मेरे श्याम**' का मनाया गया। संतोष बालोदिया ने बताया कि इस कार्यक्रम में शहर की सैंकड़ों महिलाओं ने भाग लिया। श्याम भजन गायकों ने श्याम को रिझाने के लिए एक से एक अच्छे भजन गाकर श्रोताओं का मन जीत लिया तथा महिलाएं नाचने के लिए विवश हो गई। अखण्ड कुमावत नारी युवा शक्ति की कार्यकारिणी के सभी सदस्यों ने कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जी तोड़ मेहनत की जिसके परिणामस्वरूप कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा। कार्यक्रम का समापन आरती के साथ सम्पन्न हुआ तथा 'अगले साल फिर मिलेंगे' के आह्वान के साथ सभी ने विदाई ली।

## अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं का सम्मान

8 मार्च, 2024 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विभिन्न क्षेत्रों में कुमावत समाज की महिलाओं द्वारा उल्लेखनीय कार्य करने के लिए टीम चेतन धुंधारिया ने उन्हें सम्मानित किया।

महिलाओं ने इस अवसर पर अपने अनुभव शेयर किए। सम्मान समारोह में सुनीता नांदीवाल, मेघना कुमावत, नीतू गेदर, रश्मि बालोदिया, रोहिणी कुमावत, सोनम कुमावत, माया घोड़ेला, आशा कुमावत, मंजू कुमावत, मीना कुमावत ने भाग लिया।

डॉक्टर पायल कुमावत पुत्री श्री रोहित कुमार कुमावत (कोलूकरिया) निवासी सिरोही नीमकाथाना, हाल जयपुर को डॉक्टर बनने पर हार्दिक बधाई।

# कुमावत समाज तेलंगाना के चुनाव

हैदराबाद, 1 मार्च। कुमावत समाज तेलंगाना के चुनाव कुमावत समाज भवन में आयोजित हुए जिसमें वर्ष 2024-25 के कार्यकाल के लिए सर्वसम्मति से चुनाव सम्पन्न हुए। इसमें अध्यक्ष सोनाराम तिलायचा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष : धर्माराम डैय्या (अलवाल), चेना राम रेणवाल (रामांतपुर), आसुराम चांदोरा (काली मंदिर), शंकरलाल माननिया (उस्मान गंज), बुद्धाराम होतवाल (गंडीमैसम्मा), उपाध्यक्ष : बाबूलाल माननिया (शाहअलीबंडा), दिनेश मांगर (अलवाल), नारायण लाल घोणावड़ (गोशामहल), ओम प्रकाश चांदोरा (नागरगुल), पारसमल करोलिया (सफीलगुड़ा) हनुमान रोहीवाल (बीरमगुड़ा), मंत्री : ओम प्रकाश हांगर (कोंडापुर), सहमंत्री हनुमान बालरेचा (काटेदान), अमरचंद माननिया (मणिकोंडा), पप्पूलाल माटावत (काली मंदिर), महेन्द्र दुगलदिया (बोरमपेट), मोतीलाल बाकरेचा (बोलारम), कोषाध्यक्ष पवन कुमार हांगर (बीएनरेड्डीनगर), सह-कोषाध्यक्ष रूपाराम मालीवाल (सैनिकपुरी) नवरतन होतवाल (बोलारम), धर्माराम मोमावत (तुलसीनगर), धन्नाराम बाकरेचा (संगारेड्डी), बाबूलाल (कूकटपल्ली), प्रचार-मंत्री सुनील कुमार मोरवाड़िया (बीरमगुड़ा), सह-प्रचार मंत्री भाकरराम इराड़ा (शमशाबाद), राजूराम बाकरेचा (गोकुल प्लाट), माणकचंद मेड़तिया (बालाजीनगर), पप्पूलाल दुलतिया (काटेदान), रमेश कुमार बाकरेचा (नानकरामगुड़ा), सीआर रेणवाल (रामंतापुर), मोहनलाल मावर (मोतीनगर) तथा कार्यकारिणी सदस्य भी बनाये गये।

## तिरूपति कुमावत समाज सेवा संघ का गठन

तिरूपति में कुमावत समाज भवन में कुमावत समाज की नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसमें कुमावत समाज के सभी गणमान्य लोगों ने भाग लिया। जिसमें भंवरलाल घोड़ावड़ को सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित किया गया साथ ही मंगाराम माननिया, मोहनलाल दुबलदिया को उपाध्यक्ष, सचिव पद पर लिखराम रेणवाल, सह सचिव पप्पूराम माननिया व रूपाराम बावलेचा तथा कोषाध्यख गोपाल महरोता का निर्वाचन हुआ। अध्यक्ष भंवर लाल ने कहा कि वे सभी लोगों को साथ लेकर चलेंगे तथा बड़े बुजुर्गों से सलाह लेकर आगे बढ़ेंगे।

नवयुवम मण्डल में अमृतलाल गोयल, तुलसाराम लारना, गोपाल महरोता, भागीरथ माननिया को जिम्मेदारी दी गई।

## अणतपुरा मीडिया प्रभारी पर मोना कुमावत नियुक्त

जयपुर। कुमावत सेवा समिति किशनगढ़ रेनवाल की कार्यकारिणी का गठन किया गया। जिसमें 16 विभाग का गठन कर अलग-अलग व्यक्ति को जिम्मेदारी दी गयी। अध्यक्ष घनश्याम जेठीवाल, उपाध्यक्ष मोहनलाल करोड़ीवाल के नेतृत्व में मोना कुमावत को मीडिया प्रभारी के पद पर नियुक्त किया गया। अध्यक्ष ने बताया मोना समाज के एक्टिव पत्रकार हैं। इस दौरान मंढा भीमसिह सरपंच रामगोपाल बासीनवाल, बाबूलाल बरी, पूर्व वार्ड पंच नंदा राम, देवीलाल कुमावत, गोपाललाल शर्मा, सिद्धार्थ बरी भागचंद कुमावत सहित समस्त ग्रामवासियों ने बधाई दी ओर उज्जवल भविष्य की कामना की।

## भारती वर्मा जनप्रहरी ने दिया सुझाव

राजस्थान पत्रिका कार्यालय में राजनीति के साथ शहर से जुड़े मुद्दों पर भी अलग-अलग विधानसभा क्षेत्रों से आये जनप्रहरियों ने सुझाव दिये तथा समस्याओं के निराकरण की मांग की। इनमें भारती वर्मा (तोंदवाल) ने भी भाग लिया। इस संवाद कार्यक्रम में सफाई, सड़क सुधार, यातायात व्यवस्था, फ्लाई ओवर बनाने, खेल सुविधा विस्तार तथा तथा पर्यावरण से सम्बन्ध्णी मामलों पर चर्चा हुई। सभी ने एक रोडमैप तैयार कर पत्रिऱका के साथ काम करने पर सहमति दी।

## स्नेहा का चयन राजस्थान हॉकी टीम में

उदयपुर की उभरती हुई खेल प्रतिभा स्नेहा कुमावत का चयन श्रेष्ठ प्रदर्शन की बदौलत राजस्थान सीनियर हॉकी टीम में किया गया है। ये अब राजस्थान टीम में रहकर 14वीं हॉकी इंडिया सीनियर महिला स्पर्धा में अपने प्रदर्शन करेगी। यह घोषणा राजस्थान हॉकी संघ के अध्यक्ष अरुण सारस्वत ने की है।

'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से स्नेहा कुमावत को बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना।

## अमरचन्द मण्डावरा सहप्रभारी नियुक्त

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी (अन्य पिछड़ा वर्ग विभाग) ने लोकसभा चुनाव, 2024 के लिए अन्य पिछड़ा वर्ग के लोकसभा सह प्रभारी जयपुर के पद पर अमरचन्द मण्डावरा को नियुक्त किया गया है।

**'कुमावत इंडिया'** पत्रिका की ओर से अमरचंद मण्डावरा को बधाई।

# ब्यावर में सामुहिक विवाह सम्पन्न

## 14 जोड़े बने हमसफर

ब्यावर। 12 मार्च, 2024 श्री कुमावत पंचायत, ब्यावर के तत्वावधान में 22वाँ सामुहिक विवाह का आयोजन किया गया। प्रात: चर्च रोड स्थित कुमावत पंचायत भवन से सभी दुल्हे घोड़ी पर सवार होकर गाजे-बाजे के साथ रवाना हुए तथा विवाह स्थल पहुंचे। मार्ग में समाजसेवी संस्थाओं द्वारा पुष्प वर्षा की गई तथा शीतल पेय पिलाया गया। विवाह स्थल पर पहुंचने पर तोरण की रस्म के बाद विद्वान पंडितों ने म्यूजिकल तरीके से मंत्रोच्चार के साथ पाणिग्रहण संस्कार कराया। इसके बाद नवदम्पत्तियों को समिति व समाजजनों की ओर से उपहार दिए गए, जिन्हें देखकर सभी लोग दंग रह गए। विवाह की सभी व्यवस्थाएं बड़ी ही सुचारू रही तथा महिला मोर्चा की भागीदारी भी प्रशंसनीय रही। महिलाओं ने विवाह पूर्व संध्या को संगीत का रंगारंग कार्यक्रम भी प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि शंकर सिंह रावत, विधायक ने कहा कि सामुहिक विवाह करना समय की मांग है, यह सामाजिक बदलाव का प्रमाण है। ऐसे आयोजन करने से नव-युगल व उसके परिवार पर कर्ज का बोझ नहीं आता। विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक आसीन्द नानूराम कुमावत ने बेटियों को पढ़ाने, घर के काम में निपुण बनाने तथा पारिवारिक व्यवहारों में गुणवान बनाने के लिए कहा। वहीं समारोह के अध्यक्ष विष्णु कुण्डलवाल, मुम्बई ने कहा कि विवाह उपरांत आशीर्वाद समारोह करना धन का दुरुपयोग एवं कुरीति है। इस अवसर पर डॉ. संजय गहलोत सीएमएचओ, डॉ. लोकेश कुमावत, सिंधी समाज के संत शंम्भूलाल, हनुमान आर्य अजमेर कुमावत समाज अध्यक्ष, सत्यनारायण महावर थांवला अध्यक्ष, चन्द्र प्रकाश मेहरा पीसांगन अध्यक्ष, संजय किरोड़ीवाल किशनगढ़ अध्यक्ष, संगीता कुमावत अजमेर महिला समिति अध्यक्ष तथा संतोष बालोदिया अखंड नारी युवा व्यक्ति अध्यक्ष जयपुर ने भी भाग लिया।

### सामूहिक विवाह

**17 अप्रेल, 2024, रामनवमी**

- श्री कुमावत समाज सुधार व सेवा समिति नावांसिटी
- श्री स्वामिनी सेवा समिति, जयपुर (सर्व समाज)
- श्री क्षत्रिय कुमावत समाज सामूहिक विवाह एवं विकास समिति, त्रिवेणी धाम, शाहपुरा

**10 मई, 2024, अक्षय तृतीया**

- कुमावत समाज सामुहिक विवाह सेवा समिति, बिलाड़ा

**16 मई, जानकी नवमी**

- कुमावत क्षत्रिय समाज विकास समिति, खेड़ा बालाजी

# नियमित ध्यान एवं परोपकारिता की भावना प्रसन्नता का ख़ज़ाना

वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया है कि कारण आधारित वैज्ञानिक जीवन शैली से प्रेम आधारित भारतीय आध्यात्मिक जीवन शैली ही श्रेष्ठ है। यह तथ्य वैज्ञानिकों द्वारा माथ्युरिका को पृथ्वी का सबसे प्रसन्नचित्त व्यक्ति घोषित करने से सिद्ध हुआ है । माथ्युरिका का जन्म फ्रांस के एक समृद्ध परिवार में हुआ तथा 26 वर्ष की उम्र Molecular Genetics में नोबेल विजेता वैज्ञानिक Francois Jacob के निर्देशन में पी.एच.डी करने के बाद उत्तर भारत में आकर रहने लगे तथा अब बौद्ध संन्यासी है। अब तक 10,000 घंटे से ज़्यादा ध्यान (Meditation) करने वाले 70 वर्षीय माथ्युरिका को दुनियाँ का सबसे प्रसन्नचित्त व्यक्ति घोषित किया गया है । माथ्युरिका ने बताया कि Stop thinking me, me, me अर्थात् गीता में वर्णित कर्त्ता भाव का अभाव ही प्रसन्नता का राज है । इसके अतिरिक्त नियमित ध्यान (Meditation) एवं परोपकारिता की भावना ही प्रसन्नता का ख़ज़ाना है।

**- एस आर सिंघाटिया**

# हिंदू नववर्ष विक्रम संवत 2081 होगा, उसे विक्रम सम्वत 2081 पिङ्गल के नाम से जाना जाएगा

नए साल 2024 में चैत्र शुक्ल प्रतिपदा मंगलवार 9 अप्रैल को पड़ रही है। हिंदू नववर्ष विक्रम संवत 2081 होगा। उसे विक्रम सम्वत 2081 पिङ्गल के नाम से जाना जाएगा। इस दिन हिंदू नए वर्ष यानी नव संवत्सर की शुरुआत होती है। उत्तर भारत में इसी दिन से चैत्र नवरात्रि की शुरुआत होती है और लोग आदि शक्ति की घटस्थापना कर नौ दिन पूजा अर्चना करते हैं और घर वालों की सुख समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं। इस बार का हिंदू नववर्ष सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग में शुरू हो रहा है। उस दिन कलश स्थापना के साथ ही पहली नवदुर्गा मां शैत्रपुत्री की भी पूजा होगी।

हिंदू नव वर्ष की तारीख निश्चित न होने का कारण यह है कि यह भारतीय संस्कृति की नक्षत्रों और कालगणना आधारित प्रणाली पर तय होता है। इसका निर्धारण पंचांग गणना प्रणाली यानी तिथियों के आधार पर सूर्य की पहली किरण के उदय के साथ होता है, जो प्रकृति के अनुरूप है। यह पतझड़ की विदाई और नई कोंपलों के आने का समय होता है। इस समय वृक्षों पर फूल नजर आने लगते हैं जैसे प्रकृति किसी बदलाव की खुशी मना रही है।

**भारत का राष्ट्रीय पंचांग :** भारतीय नववर्ष यानी हिंदू नववर्ष, भारतीय राष्ट्रीय पंचांग या भारत के राष्ट्री कैलेंडर का पहला दिन होता है, जो शक संवत पर आधारित है। भारत में सिविल कामकाज के लिए इसे ग्रेगोरियन कैलेंडर के साथ-साथ 22 मार्च 1957 (भारांग: 1 चैत्र 1879) को अपनाया गया था। इसमें चंद्रमा की कला (घटने और बढ़ने) के अनुसार महीने के दिनों की संख्या निर्धारित होती है।

# राम भारत के आधार

राम भारत के आधार हैं, विचार हैं, विधान है तथा चेतना है। इसे पहले तो उन सम्मानीय लेखकों ने समझा जिन्होंने रामायण, रामचरित मानस, कम्बन रामायण, ओडिया रामायण, दाण्डी रामायण जैसे ग्रंथ लिखे। राम के आदर्श का वर्णन हजारों वर्षों से भारत के जन-जन ओर कण-कण में व्याप्त है। भारत की संस्कृति, परम्परा, जीवनशैली व नैतिक मूल्यों में राम रचे-बसे हुए हैं। राम में बल, पराक्रम, सत्यनिष्ठा, आज्ञाकारिता, विनयशीलता, उदारता, क्षमाशीलता, प्रेम व त्याग, सहिष्णुता जैसे गुण है। उन्होंने जीवन में जो आदर्श अपनाएं वे आज भी हमारी संस्कृति में सर्वमान्य है।

हमारे संविधान में रामदरबार के चित्र को समाहित इसलिए ही किया गया। वहीं महात्मा गांधी ने भी रामराज्य को अपनाने पर जोर दिया था। रामजन्मभूमि बाबरी मस्जिद विवाद जब संविधान पीठ के समक्ष निर्णयार्थ आया तो पीठ ने भी यह समझा कि राम सदियों से भारत के आधार हैं तथा गुणावगुण देखकर अयोध्या में रामजन्मभूमि के पक्ष में निर्णय दिया।

राम किसी कहानी का किरदार मात्र नहीं हैं अपितु अयोध्या में राजा दशरथ के यहां वास्तव में जन्मे थे। कोई भी लेखक एक काल्पनिक चरित्र का इतना अच्छा वर्णन नहीं कर सकता। न कोई इतने बड़े-बड़े ग्रंथ लिख सकता है। राम की सर्वव्यापकता अयोध्या से मिथला, नेपाल, मध्य प्रदेश से कर्नाटक व तमिलनाडु तक है। इतने बड़े भू-भाग में राम के अस्तित्व को मानना, उनके आदर्शों को मानना तथा गुणगान करना अपने आप में उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम राम मान लिया जाता है। काश भारत के मुस्लिम भाई भी ऐसा कर पाते तो धर्मिक सहिष्णुता की उच्च मिसाल होती। नेपाल में तो राम को अपना दामाद माना जाता है। रामलीला का मंचन भारत में ही नहीं अपितु इण्डोनेशिया व कम्बोडिया में होना तथा मुस्लिम बाहुल्य होने के बावजूद राम को अपनी पूवर्ज मानना बड़ी बात है।

हमारी संस्कृति वसुधैव कुटुम्बकम की है पर धार्मिक उन्माद, लड़ाई-झगड़े ओर कटुता का आज समावेश हो गया है। हम अहंकार, स्वार्थ व भेदभाव के दायरे से निकले और हमारी संस्कृति का बोध करें। पहले भी भरत के अगाध प्रेम और त्याग के वशीभूत होकर राम अयोध्या लौट आये थे। पुन: 22 जनवरी, 2024 को अयोध्या में राम आ गये हैं। हमें भी भरत की तरह निर्मल हृदय जैसा चरित्र अपनाना होगा तब ही हम राम को अपने मन मंदिर में बसा पायेंगे। इस रामनवमी से ही अपने शब्दों, उद्देश्यों, कर्तव्यों में प्राणीमात्र का हित देखें तो सुख, संतोष व समृद्धि के पथ पर बढ़ा जा सकेगा। राम के आदर्श अपनाकर एक साधारण व्यक्ति भी राम जैसा बन सकता है।

# रामनवमी पर रामलला को 'सूर्य तिलक'

अयोध्या में नव, भव्य एवं दिव्य मंदिर में 22 जनवरी, 2024 को राम लला की प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद 17 अप्रेल, 2024 को पहली रामनवमी आ रही है। रामलला के नयनाभिराम श्याम वर्ण के विग्रह के दर्शन के लिए 1 लाख से डेढ़ लाख श्रद्धालु रोज अयोध्या पहुँच रहे हैं। अयोध्या पूर्णत: राममय हो गयी है और श्रद्धालु भी दर्शन करके कृतार्थ महसूस कर रहे हैं। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से नये कालचक्र का उद्‌भव हुआ है। इससे राम के आदर्शों की भी प्राण प्रतिष्ठा हुई है। अयोध्या में मंदिर के अलावा मुख्य मार्गों व सरयू तट का भी कायाकल्प हो गया है तथा अनेक ऐसे स्थल बने हैं जिसे देखकर श्रद्धालु रोमांचित हैं।

इस बार रामनवमी भी यहां बड़े ही उल्लास से मनाई जायेगी। यह दिन हमारे लिए खास होगा क्योंकि हर वर्ष रामनवमी को सूर्यवंशी श्रीरामलाल के भाल पर सूर्य भगवान 'सूर्य तिलक' करेंगे। यह सम्भव होगा वैज्ञानिकों द्वारा मिरर और लैंस से तैयार किये गये खास उपकरण से जिसके माध्यम से दिन के 12 बजे सूर्य की किरणें गर्भगृह तक आयेगी तथा 6 मिनट तक यह भव्य दृश्य देखने को मिलेगा।

राम हमारी रज-रज में रमे हुए हैं, वे न्यायप्रिय, शांतिप्रिय और जीवन के हर आयाम में हैं। राम ने जिन मर्यादाओं को स्थापित किया वह हमारी संस्कृति तथा जीवनशैली में आज भी देखने को मिलती है। हमारे 16 प्रसिद्ध नृत्यों में राम की उपासना होती है।

आईए, हम प्रतिवर्ष की भांती इस वर्ष और अधिक उत्साह से रामनवमी का पावन पर्व मनाए। इस दिन मंदिर जाये, राम की पूजा, स्तुति, भजन व आरती करें। विचार गोष्ठियां आयोजित कर राम के उच्च आदर्शों पर बातचीत करें ओर अपने जीवन में उन्हें अपनाने का प्रयास करें यही राम के प्रति हमारी सच्ची श्रद्धा व भक्ति होगी।

# पालक-कोफ्ता-करी सब्जी

पालक बारीक काट लें फिर इसमें बेसन मिलाकर कोफ्ते बनाएं और टमाटर के साथ क्रीम की हल्के मसाले वाली ग्रेवी में पालक-कोफ्ता-करी की स्वादिष्ट सब्जी बनाए। जिसे रोटी पराठे या चावल के साथ परोस सकते हैं। इसे बनाने के लिए निम्न प्रक्रिया अपनाएं-

**आवश्यक सामग्री कोफ्ते के लिये :** पालक 200 ग्राम, हरी मिर्च 1(बारीक कटी हुई), अदरक आधा इंच टुकड़ा (कद्दूकस किया हुआ), बेसन 1 कप (100 ग्राम), नमक 1/4 छोटी चम्मच, लाल मिर्च पाउडर 1/4 छोटी चम्मच।

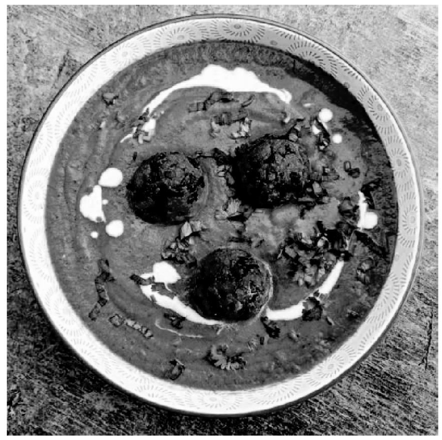

**ग्रेवी के लिये :** टमाटर 4 (300 ग्राम), हरी मिर्च 2 (पेस्ट), अदरक 1 इंच टुकड़ा (पेस्ट), हरा धनिया 2-3 टेबल स्पून (बारीक कटा हुआ), जीरा पाउडर आधा छोटी चम्मच, हींग 1 पिंच, हल्दी पाउडर आधा छोटी चम्मच, धनिया पाउडर 1 छोटी चम्मच, लाल मिर्च पाउडर 1/4 छोटी चम्मच, गरम मसाला 1/4 छोटी चम्मच, नमक 1 छोटी चम्मच या स्वादानुसार, क्रीम आधा कप (100 ग्राम), तेल 2-3 टेबल स्पून।

**विधि :** पालक कोफ्ता करी बनाने के लिये सबसे पहले हम पालक के कोफ्ते बनायेंगे। इसके लिए पहले पालक के पत्तों को बारीक काट लें। एक बड़े प्याले में बेसन निकाल लेकर और थोड़ा पानी डालते हुए गुठलियां समाप्त हो जाने तक अच्छे से गाढ़ा घोल तैयार कर लिजिए। बेसन के घोल में बारीक कटा हुआ अदरक, बारीक कटी हरी मिर्च, चौथाई छोटी चम्मच लाल मिर्च पाउडर और आधा छोटी चम्मच नमक डालकर सभी मसालों को अच्छे से मिला लीजिए, अब इसमें काट कर रखी हुई पालक डालकर अच्छी तरह मिला दिजिए। कोफ्ते बनाने के लिए मिश्रण तैयार है।

कढ़ाई में तेल डालकर गरम कीजिये, तेल गरम होने पर मिश्रण से थोड़ा मिश्रण निकाल कर, कोफ्ते का आकार देते हुये तेल में डाल दीजिए। इन्हें पलट-पलट कर, ब्राउन होने तक तल लीजिये, तले हुये कोफ्ते प्लेट में निकाल कर रख लीजिये।

**ग्रेवी बनाइये :** कढ़ाई में 2 टेबल स्पून तेल डालकर गरम कीजिये। गरम तेल में जीरा, हींग, हल्दी पाउडर, धनिया पाउडर डालकर हल्का सा भून लीजिए। टमाटर, अदरक, हरी मिर्च का पेस्ट डालिये और मिलाइये, लाल मिर्च पाउडर डालकर मसालों को धीमी आंच पर तब तक भूनिये जब तक कि मसाले के ऊपर तेल तैरता न दिखाई देने लगे। अब क्रीम डालकर लगातार चलाते हुए तब तक भूनें जब तक की मसाले में उबाल न आ जाए। ग्रेवी में उबाल आने पर 1-2 कप पानी डाल दीजिए और लगातर चलाते हुए फिर से उबाल आने तक पकाएं। अब गरम मसाला, नमक और थोड़ा सा हरा धनिया डाल कर मिला दीजिए। ग्रेवी में कोफ्ते डाल दीजिये, मिलाइये और सब्जी को ढक कर 2 मिनिट धीमी आंच पर पकने दीजिए। सब्जी बनकर तैयार है। इसमें हरा धनिया डाल कर सजाइये।

**सुझावः** ग्रेवी आप और भी तरीके से बना सकते है, काजू से या मावा, मलाई ग्रेवी या खसखस टमाटर ग्रेवी किसी भी प्रकार की ग्रेवी बनाइये और कोफ्ते, ग्रेवी में डाल कर सब्जी बना लीजिये.

क्रीम की ग्रेवी के लिये ग्रेवी को तबतक लगातार चलाते हुए पकाना है, जब तक इसमें उबाल नहीं आ जाता, नहीं तो क्रीम फट सकती है।

**- भारती तोंदवाल**

# रामायण की महिमा

हर पिता के भाग्य में बेटी नहीं होती। राजा दशरथ जब अपने चारों बेटों की बरात लेकर राजा जनक के द्वार पहुंचे तो राजा जनक ने सम्मान पूर्वक बरात का स्वागत किया, तभी दशरथ जी ने आगे बढ़कर जनक जी के चरण छू लिए। चौंक कर जनक जी ने दशरथ जी को बाहों में थाम लिया और कहा महाराज आप बड़े हैं, वरपक्ष वाले हैं, यह उल्टी गंगा कैसे बहा रहे हैं।

इस पर दशरथ जी ने बड़ी सुन्दर बात कही, महाराज आप दाता है, कन्यादान कर रहे हैं। मैं तो याचक हूँ। आपके द्वार कन्या लेने आया हूँ। अब आप ही बताइये दाता और याचक में कोन बड़ा है। यह सुनकर जनक के नेत्रों से अश्रुधारा बह निकली। भाग्यशाली हैं वो जिनके घर होती है-बेटियां, हर बेटी के भागय में पिता होता है, लेकिन हर पिता के भाग्य में बेटी नहीं होती।

**-मनोहर लाल वर्मा ( मारवाल )**

# वाणी के संयम की महिमा

परमपिता परमेश्वर ने हमें विचार करने के लिए मस्तिष्क प्रदान किया है। हम जब कभी अपने विचारों को मस्तिष्क के उचित-अनुचित तराजू पर तौलकर उसकी उपादेयता का मूल्यांकन करने का प्रयास करते हैं, तभी हमारे भावों की सार्थक अभिव्यक्ति होती है। बोलने में कोई बुराई नहीं है किन्तु अनर्गल प्रलाप करना, दिनभर अकारण बड़बड़ाना नितान्त अवांछित है। ऐसे लोग ही परमात्मा द्वारा प्रदत्त शक्ति का दुरुपयोग करते हैं। वाणी वस्तुत: हमारे विचारों, संस्कारों और चरित्र का अभिलेख है। किसी व्यक्ति की वाणी सुनकर हम उसके चरित्र का अनुमान लगा सकते हैं। जब तक आप अपना मुँह बंद रखते हैं तब तक यह अंदाज नहीं लगता कि आप क्या हैं। लेकिन ज्योंही आपका मुँह खुला, आपके इतिहास, भूगोल की जानकारी हर व्यक्ति को हो जाती है। इस संबंध में एक लघुकथा उल्लेखनीय है। किसी गाँव में एक बहुत ही फूहड़ किस्म का व्यक्ति रहता था। गाँव में उकी कोई इज्जत नहीं करता था। इससे वह सदा दु:खी रहता। एक दिन उस गाँव में एक सन्त का आगमन हुआ। उस व्यक्ति ने उन सन्त के पास जाकर प्रार्थना की कि महाराज, इस गांव में मेरी कोई इज्जत नहीं करता। संत ने कहा कि आज से तुम चुप रहना सीखो और जरूरत पड़ने पर ही कुछ बोलो। उसने सन्त की बात मान ली और चुप रहने लगा। केवल चुप रहने से ही गांव के लोग उसे समझदार व्यक्ति मानने लगे। ऐसा इसलिए क्योंकि वह अकारण बक-बक नहीं करता था। लोगों को समझ में आ गया कि वह समझदार व्यक्ति हो गया है। अब वह बक-बक नहीं करता है। इसीलिये सन्त-महात्मा हमेशा इस बात पर बल देते हैं कि **अकारण बोलकर दु:ख आमंत्रित मत करो क्योंकि आप नहीं जानते कि आपकी किस बात का क्या प्रभाव पड़ सकता है और आपकी कौन सी बात दूसरे को आहत कर दे।** आपकी बात से एक बार फिर किसी को चोंट लग जाती है। तो उसे आप दुरुस्त नहीं कर सकते। **शरीर की चोंट तो व्यक्ति भुला देता है लेकिन बात की चोंट वह कभी नहीं भूला पाता।** बात की चोंट से उत्पन्न शत्रुता को मित्रता में बदलना बहुत कठिन हो जाता है।

इसीलिये श्रीमद्भागवद्गीता के सत्रहवें अध्याय के पंद्रहवें श्लोक में वाणी संबंधी तप की चर्चा करते हुए योगेश्वर भगवान श्री कृष्ण ने इस तथ्य को रेखांकित किया है कि जो उद्वेग न करे, प्रिय हो, हितकारक हो, यथार्थ भाषण, वेद शास्त्रों के पठन एवं परमात्मा का नाम जप का अभ्यास ही वाणी संबंधी तप कहा जाता है।

**अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं चयत्।**
**स्वाध्यायाभ्यसनं चैव षाङ्गमयं तप उच्यते।।( 17/15 )**

**- प्रो. बी.के. कुमावत, उज्जैन**

कहानी

# असली समस्या क्या?

एक गांव में एक गरीब किसान रहता था। उसके पास एक बहुत छोटा सा खेत था जिसमें कुछ अन्न व सब्जियां उगा कर वह अपना व अपने परिवार का पेट पालता था। गरीबी के कारण उसके पास धन की हमेशा कमी रहती थी। परंतु वह बहुत ईर्ष्यालु स्वभाव का था। इस कारण उसकी अपने पड़ोसियों व रिश्तेदारों से बिल्कुल भी नहीं बनती थी।

किसान की उम्र ढ़लने लगी थी। अत: उसे खेत पर काम करने में काफी मुश्किल आती थी। खेत जोतने के लिए उसके पास बैल भी नहीं थे। सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर रहना पड़ता था। खेत में या आस-पास कोई कुआं भी नहीं था जिससे वह अपने खेतों की सिंचाई कर सके।

एक दिन वह अपने खेत से थका-हारा लौट रहा था। उसे रास्ते में सफेद कपड़ों में सफेद दाढ़ी वाला एक साथ मिला। साधु बोला, 'क्या बात है भाई, बहुत दु:खी जान पड़ते हो?'

किसान बोला, ''क्या बताऊं बाबा, मेरे पास धन की बहुत कमी है, मेरे पास एक बैल होता तो मैं खेत की जुताई, बुआई और सिंचाई का सारा काम आराम से कर लेता।''

साधु बोला, 'अगर तुम्हें एक बैल मिल जाए तो तुम क्या करोगे?' किसान ने कहा, 'तब मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहेगा। मेरी खेती का सारा काम बहुत आसान हो जाएगा पर बैल मुझे मिलेगा कहां से?' किसान बोला।

'मैं आज ही तुम्हें एक बैल दिए देता हूं, यह बैल घर ले जाओ और घर जाकर अपने पड़ोसी को मेरे पास भेज देना' साधु ने कहा।

किसान बोला, 'आप मुझे बैल दे देंगे, यह जानकर मुझे बहुत खुशी हुई। परंतु आप मेरे पड़ोसी से क्यों मिलना चाहते हैं?'

साधु बोला, 'अपने पड़ोसी से कहना कि वह मेरे पास आकर दो बैल ले जाए।'

साधु की बात सुनकर किसान को भीतर ही भीतर क्रोध आने लगा। वह ईर्ष्या के कारण जल-भुन कर रह गया। वह बोला, ''आप शायद नहीं जानते कि मेरे पड़ोसी के पास सब कुछ है। यदि आप मेरे पड़ोसी को दो बैल देना चाहते हैं तो मुझे एक बैल भी नहीं चाहिए।''

साधु ने बैल को अपनी ओर खींच लिया और कहा, ''क्या तुम जानते हो कि तुम्हारी समस्या क्या है? तुम्हारी समस्या गरीबी नहीं ईर्ष्या है। तुम्हें जो कुछ मिल रहा है, यदि तुम उसी को देखकर संतुष्ट हो जाते और पड़ोसियों व रिश्तेदारों की सुख-सुविधा से ईर्ष्या नहीं करते तो शायद संसार में तुम सबसे ज्यादा सुखी इंसान बन जाते।''

इतना कहकर साधु जंगल में ओझल हो गया।

**निष्कर्ष :** अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है। हम बदलेंगे, युग बदलेगा।

# फास्ट फूड खाने के दुष्परिणाम

आज की पीढ़ी के बारे में यदि बात की जाए तो लगभग 80 फीसदी युवा फास्ट फूड के दीवाने हैं। आप अपने इर्द-गिर्द यदि नजर घुमाकर देखेंगे तो चौंकाने वाले नजारे सामने पाएंगे। लगभग हर दसवें कदम पर खाने-पीने से संबंधित दुकानें, रेस्टरां, चौपाटी, ठेले, चाट भंडार तथा पैकेट बंद फास्ट फूड कार्नर जैसे दुकानों का जमावड़ा होने लगा है। पीजा, बर्गर, मोमोज, मन्चूरियन, नूडल्स तथा कॉल्ड कॉफी का सेवन युवा वर्ग का पहला शौक बनने लगा है। इतनी दुकानें यदि खुल रही हैं तथा सफलतापूर्वक चल रही हैं तो निश्चित तोर पर युवा पीढ़ी के दम पर ही चल रही हैं। मगर बाजार में बिक रही यह हानिकारक खाद्य वस्तुएं हमारे शरीर के लिए और स्वास्थ्य के लिए कितनी घातक साबित हो रही हैं क्या आपने कभी इस विषय में सोचा है। इन खाद्य सामग्रियों को बनाने में बहुत ही हल्की क्वालिटी का घी, तेल, बटर, मसाले तथा अन्य सामान का इस्तेमाल किया जाता है जिनका हमारे शरीर पर बहुत ही गलत प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिकत पैकेट बंद चीजों में कई प्रकार के केमिकल तथा प्रेजरवेटिव मिलाए जाते हैं ये भी शरीर के लिए हानिकारक हैं। इसलिए बहुत छोटी उम्र में लोगों को आज हाई बी.पी., थाइराइड, मोटापा, शुगर जैसे रोगों का सामना करना पड़ रहा है। आज की पीढ़ी घर-परिवार में बनाए जाने वाले भोजन को ऑयली, हैबी तथा तला भुना कह कर नापपसंद कर देती है जबकि बाहर की ब्रेड व मैदा की बनी चीजें खाकर संतुष्ट हैं जबकि परम्परागत पकवान तथा खाद्य पदार्थ हमें उतना नुकसान नहीं पहुँचाते जितनी आजकल प्रचलित कच्ची मैदा की बनी चीजें पहुंचाती हैं। कुछ विदेशी कम्पनियों ने भारत में अपना व्यापार जमाने के उद्देश्य से विज्ञापनों व कुछ प्रलोभनों के जरिए यहां के युवाओं को लुभाकर गुमराह किया और युवाओं के दिमाग में यह भ्रम बैठा दिया कि पीजा, बर्गर, मोमोज, हाट डॉग, नूडल्स जैसे खाद्य पदार्थ हमारे लिए पौष्टिक तथा कैलोरी से पूर्ण लाभदायक फास्टफूड हैं। नतीजतन जिन चीजों के नाम भी कुछ समय पूर्व तक हम नहीं जानते थे वे चीजें बाजार में धड़ल्ले से बिकने लगी ओर आज ये विदेशी फूड कम्पनियां इन हानिकारक चीजों को बेच करोड़ों का मुनाफा कमा रहीं है। आज विदेशी कम्पनियां अपना धंधा भारतवर्ष में जमाकर चहुँओर अपने पैर पसार चुकी हैं तथा यहां के परम्परागत स्थानीय पकवान तथा व्यंजन लोकप्रियता की सूची से लगभग गायब होते जा रहे हैं। इसी के साथ ऑन लाइन व्यापार का बोलबाला भी बढ़ गया है। इस प्रकार आज हम दोहरे नुकसान की मार झेल रहे हैं। एक तरफ आर्थिक नुकसान तथा दूसरी तरफ स्वास्थ्य का नुकसान। अत्यधिक मात्रा में फास्टफूड के सेवन से हृदय, गिडनी, लीवर संबंधी रोग, प्रजनन क्षमता में कमी, गंजापन, त्वचा संबंधी रोग, नर्वस सिस्टम में गड़बड़ी, श्वसन संबंधी रोग, दांतों में सड़न, बच्चों के विकास में बाधा संबंधी रोग, कुपोषण आदि रोगों में बढ़ोतरी हो रही है। समय रहते आने वाले खतरों से चेतना अत्यन्त आवश्यक है। यदि हमने जल्दी ही अपनी जीवन शैली और खाने-पीने की आदतों को नहीं सुधारा तो हमें तथा आने वाली पीढ़ियों को भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है। इसलिए **शुद्ध खाएं, ताजा खाएं तथा स्वस्थ रहें**। फास्ट फूड से जितनी फास्ट दूर होंगे उतने ही फायदे में रहेंगे।

**-उर्वशी बालोदिया**

## कभी लगता है...जिन्दगी...

कभी लगता है, इस जिन्दगी में,
खुशियां बेशुमार है,
तो कभी लगता है...
जिन्दगी ही बेकार है।
कभी लगता है लोगों में,
बहुत प्यार है...
तो कभी लगता है, रिश्तों में,
सिर्फ दरार है...
कभी लगता है, हम भी जिन्दगी...
जीने के लिए बेकरार है,
तो कभी लगता है सिर्फ हमें...
मौत का इंतजार है...
खुश रहने के मूल मंत्र
मन मिले जिससे-रिश्ता रखो उसी से
जहां कद्र नहीं-वहां जाना नहीं।
जो सुनता नहीं-उसे समझना नहीं
जो पचता नहीं-उसे खाना नहीं।
जो सत्य पर भी रुठे-उसे मनाना नहीं।
जो नजरों से गिर जाये-उसे उठाना नहीं।
जीवन में तकलीफें आवे-घ्रबराना नहीं।
मौसम की तरह जो दोस्त बदले-उसे
दोस्त बनाना नहीं।- **मनोहर लाल वर्मा**

## रामचरित मानस जो आईने से ही पढ़ी जा सकती है

भोपाल निवासी 18 वर्षीय कनिष्का ने 3 वर्ष की मेहनत से 1005 पेज पर एक ऐसी रामचरित मानस लिखी है जिसके अक्षर उल्टे हैं और आईने को पुस्तक के सामने लाते ही इसके अक्षर सीधे हो जाते है ओर इसे तब ही पढ़ा जा सकता है। कनिष्का उल्टे अक्षर का हुनर 7 वर्ष की उम्र से ही जानती है। उसने यह दक्षता हासिल कर विलक्षण कार्य किया है।

# जीवन का उद्देश्य दूसरों की मदद करना

जीवन का सम्पूर्ण उद्देश्य प्रसन्नता प्राप्त करना है। हम सभी इसके लिए प्रयास करते हैं, इसके लिए काम करें और अंदर से महसूस करें कि यही अंतिम लक्ष्य है। अलग-अलग लोगों के पास खुशी की अलग-अलग परिभाषाएं है लेकिन अंतत: हम सभी इसे चाहते हैं। मुझे लगता है कि समाज को वापस लौटाने और उसकी प्रगति में मदद करने से खुशी मिलती है यही जीवन का मुख्य उद्देश्य भी है। समाज को वापस देना किसी भी रूप में हो सकता है जैसे धन, विचार, भोजन देना या किसी ीी तरह से जिससे किसी को लगता है कि बदले में कुछ भी उम्मीद किए बिना दूसरें की मदद की जा सकती है। कोई भी समाज को तभी वापस लौआ सकता है जब हमारे पास पर्याप्त हो और साझा करने की बुद्धि और अच्छा विकसित की हो। जो मन हमेशा प्रसिद्धि, धन और शक्ति के लिए लालायित रहता है ओर अधिक से अधिक चाहता है वह समाज को साझा और मदद नहीं कर सकता है।

खुशी मन की एक अवस्था है और जब पूरा मन काफी समय तक एक ही वस्तु पर केन्द्रित रहता है, तो हमें खुशहाली का अहसास होता है, जब हम अपने काम में पूरी तरह से तल्लीन हो जाते हैं या रचनात्मक कार्य करते हैं जिसके लिए शहरी एकाग्रता की आवश्यकता होती है इस प्रक्रिया के दौरान, हम समय की अवधारणा को भी खो देते हैं।

एक सकारात्मक विचार पर पूरा दिमाग केन्द्रित करने से हमें कल्याण का अहसास क्यों होता है। इसका एक कारण यह हो सकता है शक्ति के साथ यह सभी विवादों को हल कर सकता है ताकि हम अपने साथ शांति से रहे। दूसरा कारण यह हो सकता है कि यह दिमाग का विस्तार करने वाला व्यायाम है जहां हमारा दिमाग सार्वभौमिक चेतना से जुड़ता है। इस प्रकार हम सभी जब एक सकारात्मक विचार या विचार पर ध्यान केन्द्रित करते हैं, तो जाने-अनजाने सार्वभौमिक मन से जड़ जाते हैं जिसके परिणामस्वरूप खुशी मिलती है।

जब हमारे पास शक्तिशाली और संतुष्ट मन होता है तो यह हमें दूसरों के साथ अनुभव और ज्ञान साझा करने की अनुमति देता है इससे खुशी और संतुष्टि मिलती है। इसलिए मुझे लगता है कि जीवन में हमारा वास्तविक उद्देश्य पहले अपने दिमाग को शक्तिशाली और मजबूत बनाना है और फिर ज्ञान को दूसरों को वापस देना है। यह भी प्रकृति का नियम है कि सभी महान विचार हम सबको ज्ञात होते हैं और उसकी प्रगति और विकास में सहायक होते हैं।

हम सभी का कर्तव्य है कि हम अपने अनूठे अनुभवों के बारे में लिखे और दूसरों के साथ साझा करें ताकि मानव जाति के समग्र ज्ञान व अनुभवों में वृद्धि हो। यह विकासवादी प्रक्रिया को बढ़ाने का सबसे अच्छा तरीका है। इस प्रकार इंटरनेट और अन्य माध्यमों से जान साझा करने से हम सभी को मदद मिलती है लेकिन कुल मिलाकर मनुष्यों के पास आत्म सुधार की व्यवस्था है ताकि उचित और निरंतर विकास हो सके।

तो आइए, हम सभी अपने अनुभव को अधिकतम करके और इसे दूसरों के साथ साझा करके एक खुशहाल, फलदायी और ऊर्जावान जीवन जीएं। यही जीवन का संपूर्ण उद्देश्य है।

**वह पथ क्या,**
**पथिक की कुशलता क्या, जिस पथ पर बिखरे शूल ना हो,**
**नाविक की धैर्य परीक्षा क्या, जब धारायें प्रतिकूल ना हो।**

।। जय श्री राम।।

-**सीमा राज कुमावत** (मारवाल)

# ब्रज की होली

होली और ब्रज एक दूसरे के पर्याय हैं। यहां के कण-कण में कृष्ण और राधा की लीलाएं रमी बसी हैं। होली की शुरुआत होली से 1 माह पूर्व होली का डांडा रोपने से हो जाती है तथा सभी मांगलिक कार्य 1 माह के लिए टाल दिये जाते हैं। ब्रज में बसंत पंचमी के दिन राधा-कृष्ण की पूजा की जाती है और बांके बिहारी जी के गुलाल का टीका लगाया जाता है तथा मंदिर में बसंती अबीर-गुलाल उड़ाया जाता है। इसके साथ ही होली का 40 दिन के पर्व की शुरुआत हो जाती है।

यूं तो उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, पं. बंगाल, बिहार, उत्तराखण्ड आदि प्रदेशों में होली धूमधाम व उत्साह से मनायी जाती है पर ब्रज में होली मनाने का अन्दाज कुछ अलग ही होता है। फाल्गुन माह में दूर-दूर से लोग ब्रज में होली देखने आते हैं। शुक्ल पक्ष की एकादशी से पूर्णिमा तक विशेष उत्सव मनाया जाता है और ठाकुरजी भी भक्तों के साथ होली खेलते हैं। होली में रंगों की फूहार से चहुं ओर प्रेम, स्नेह और अपनत्व बरसता है। होली के गीत और चंग एवं डफ की थाल हमारे जीवन को खुशनुमा बना देती है। चाहे कालिन्दी का तट हो, चाहे पनघट। ताल-तलैया/सरोवर हो सभी होली के रंग से सरोबार हो जाते हैं। बात जब बरसाने की होली की हो तो इसे लट्ठमार होली के रूप में जानते हैं। यदि यहां जाना हो तो होली के दिन से पहले ही पहुंचे अन्यथा प्रवेश मुश्किल है। होली पर यहां सुगंधित रंग बरसाया जाता है वहीं लाडली जी के मंदिर में लड्डू लुटाकर होली खेली जाती है। (यहां लाडली राधाजी को कहा जाता है ओर कृष्ण को लल्ला)। लड्डूओं की होली के अगले दिन होती है लट्ठमार होली। इंतजार होता है कि नन्दगांव से लाग बरसाना और गोपियां (गोसाई परिवार की महिलाएं) उन पर लट्ठ बरसाये। मान्यता है कि होली पर कृष्ण व उनके सखा मृदंग, झांझ, ढोल बजाते हुए नन्दगांव से बरसाना राधा व उनकी सखियों पर रंग डालने आते थे और गोपियां उन्हें छड़ियों (लकड़ियों) से भगाती थी। यह परम्परा आज भी निभाई जा रही है। इसे देखने लाखों लोग बरसाना आते हैं और वहां की गलियों के दुकानदार उनसे पैसे लेकर दुकान की छतों पर चढ़ा देते हैं। बरसाना की महिलाएं लट्ठ मारती भी है तो भी शरमाते हुए। इसे देखकर लगता है कि होली पर द्वापर युग फिर से आ गया है और ब्रज कृष्णमय हो गया है। इस रस को लाखों लोग भावविहोर होकर देखते और अपने को धन्य समझते हैं। **जय हो कन्हैया लाल की।**

# बच्चों को दें संस्कारों की सौगात

वे दिन कितने अच्छें थे, जब संयुक्त परिवार में बच्चे अपने आप ही पल जाते थे और जब कुछ खास चाहिए होता था तभी माता-पिता के पास आकर कुछ मांग करते थे। नहीं तो दादा-दादी की कहानियां व उपदेश, बुआ के प्यार में पगी फटकार, बड़ी मां का दुलार और चाचा से बाल जिज्ञासाओं के मिले जवाब उन्हें सही रास्ता दिखा देते थे। आखिर क्या कारण है कि अब छोटी उम्र में ही बच्चे राह भटक रहे हैं और अपने बच्चों को अच्छी तरह से पालने की जरूरत समझने वाले पढ़े-लिखे माता-पिता कहीं पर खुद को हारा हुआ महसूस कर रहे हैं।

नई पीढ़ी में तेजी से ज्ञान व तकनीकी के आधार पर बदलाव हो रहा है। ऐसे समय में माता-पिता तथा दादा-दादी की जिम्मेदारी अधिक बढ़ जाती है कि बच्चों को वर्तमान समय में संस्कारों से वंचित नहीं होने दिया जाए। यदि अच्छा फल चाहिए तो बीज की चिंता करनी पड़ेगी और भवन मजबूत चाहिए तो नींव की चिंता करनी पड़ेगी। बदलते परिवेश, बदलते वातावरण, बदलती शिक्षा के कारण हमारे बच्चों का रहन-सहन बिल्कुंल बदल गया है। पाश्चात्य संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण 'MoM-Dad' वाले संस्कार बच्चों में तेजी से पनप रहे हैं, बची-खुची कसर मोबाइल व टेलीविजन धारावाहिकों ने पूरी कर दी है। आज के दादा-दादी, नाना-नानी के साथ साथ माता पिता को भी सोचना चाहिए की जो संस्कार उन्हें पूर्वजों से मिले थे, क्या वे इन संस्कारों को भावी पीढी तक पहुँचा पा रहे हैं ? हर समाज में कुछ नीतिगत बातें, कुछ परम्पराएँ एवं कुछ धार्मिक मान्यताएँ होती हैं जिन्हें हम संस्कार कहते हैं। इन संस्कारों को यदि भावी पीढ़ी तक न पहुंचाया जाए तो ये समय के साथ नष्ट हो जाते हैं। जिस तरह कुछ बातें बच्चों के सामने नही की जा सकतीं, वैसे ही कुछ संकोच बड़ों के सामने भी रखा जाना चाहिए, बड़ों के सामने छोटों को संयमित व्यवहार घर के दूसरे छोटों को भी ऐसा करने की शिक्षा देता है। संस्कार हमारी अस्मिता, हमारी संस्कृति और अपनेपन की पहचान है। घर के शालीन और सौम्य वातावरण आदि व्यक्ति समाज में उसी शालीनता को लेकर पहुँचता है और उसकी अपेक्षाएँ भी उसी रूप में ढल जाती हैं। सौम्यता की इसी मिट्टी में संस्कार फलते फूलते हैं। देखा जाए तो भावी पीढ़ी को संस्कारित बनाना इतना कठिन नही है, जितना कठिन हम सोचते हैं। जिन परिवारों में बचपन से ही बच्चों को नमस्कार, चरण-स्पर्श, मन्दिर जाना, धार्मिक पर्वों पर भागीदारी करने तथा पारिवारिक आयोजनों में सम्मिलित होने का अवसर मिलता है वहाँ बच्चे स्वत: ही दीक्षित और शिक्षित होते चले जाते हैं।

वर्तमान समय में यह महसूस किया जा रहा है कि जैसे-जैसे शिक्षित नागरिकों का प्रतिशत बढ़ रहा है, वैसे-वैसे समाज में जीवन मूल्यों में गिरावट आ रही है। हमें मूल्यों के सौंदर्य का बोध होना चाहिए। बच्चे जो देश का भविष्य हैं वे तनाव, अवसाद, बाहय आकर्षण और अनुशासनहीनता के शिकार हैं। इसका कारण पाश्चात्य संस्कृति, विद्यालय या समाज ही नहीं, बल्कि संस्कारों के प्रति हमारी उदासीनता है। परिवार बच्चों की प्रथम पाठशाला है तो माता-पिता प्रथम शिक्षक। विद्यालय में हम देख रहे हैं कि जो माता-पिता अपने बच्चों में अच्छे संस्कार आरोपित करते हैं वे बाह्य वातावरण से प्रभावित हुए बिना शिक्षक द्वारा दी गई विद्या को फलीभूत करते हैं। अत: परिवार में प्रत्येक सदस्य का दायित्व है कि बच्चों में भौतिक संसाधनों के स्थान पर संस्कारों की सौगात दें। समाज के वरिष्ठ सुरेन्द्र कुमार नागा इन सबके लिए समाज के बदलते ताने-बाने और बढ़ते वैश्वीकरण को दोषी मानते हैं। वे कहते हैं कि बच्चे की परवरिश में माता-पिता के संस्कारों की अहम भूमिका होती है। जब बच्चा टूटता है तब माता-पिता की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

संस्कारों और संस्कारों की सुन्दरता के महत्व की पहली कड़ी घर से शुरू होती है। घर से ही बच्चों के संस्कार की शुरूआत होती है। अभिभावकों को इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए। इसके बाद दूसरी जिम्मेदारी स्कूल के शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की होती है, जो बच्चों के अच्छे संस्कारों का बोध कराते हैं। सिर्फ संस्कार ही नहीं, बल्कि इसके बारे में जानकारी भी होनी चाहिए। हमारे संस्कार अच्छे हैं और हमें अच्छे या खराब की जानकारी नहीं है, तो इसका महत्व नहीं रहता। लिहाजा, संस्कारों का ज्ञान और उनकी सुन्दरता ही हमें उन्नति के लिए प्रेरित करती है।

वर्तमान समय में सबसे आवश्यक विषय है लव जिहाद इसके बारे में विशेष कर अपने घर की लड़कियों को अवश्य जागरूक करें। स्वयं का आचरण ऐसा बनाएँ की बच्चे उनका अनुसरण करें। जो बीज आज बोयेंगे उसके फल आने वाली तीन पीढ़ियों में दिखाई देंगे। परम्पराओं को आगे पहुंचाना, समाज को सुरक्षित आधार देने का कर्तव्य भी हमारा है और बच्चों को संस्कार देना वर्तमान और बुजुर्ग पीढी का नैतिक कर्तव्य भी बनता है। यदि संस्कारों की एक कड़ी शुरू हो जाती है तो फिर इसमें निरंतरता बनी रहती है और यही अच्छा समाज बनाने में सहायक होती है।

**– जयसिंह गुडीवाल**

सह सम्पादक 'कुमावत इंडिया' पत्रिका

# गणगौर : जीवन के उल्लास का पर्व

जीवन की इस आपाधापी में जीना तो हम जैसे भूल ही गए हैं। ऐसे में हमारे पर्व,त्यौहार और उत्सव हमें जीवन की उस रसमयी धारा की ओर पुन: मोड़ नव स्फूर्ति से परिपूर्ण कर देते हैं। ये त्यौहार ही तो होते हैं जो हमें बताते हैं जीवन एक उत्सव भी है। चिंताओं,तनाव और दबाव के जिस दुष्चक्र से हम घिरे रहते हैं, ये हमें उससे आजाद कर जीने के लिए फिर से एक नया जोश भर देते हैं।ये हमारी गौरवमयी सनातन संस्कृति ही है जो हमें खुश होकर जीने का विधान भी बताती है।

गणगौर एक ऐसा ही त्यौहार है, जो विशेषत: महिलाओं द्वारा अपने सुहाग और परिवार की मंगल कामना के लिए मनाया जाता है। ये एक दिन का पर्व ना होकर 16 से 18 दिन चलने वाला आनंद महोत्सव है। जहाँ गाँव और शहर सभी जगह की महिलाएं रोजमर्रा के कामों से इतर अपने आप को संवारती हैं, सजाती हैं, हँसती हैं, खिलखिलाती हैं, नृत्य करती हैं। यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नही होगी कि इस महोत्सव में वो खुद को पूर्णता के साथ जीती हैं।

गणगौर का पर्व चैत्र महीने के पहले दिन (हिंदू कैलेंडर के अनुसार), होली के अगले दिन से शुरू होता है, और 16 दिनों तक चलता है। इसी माह के शुक्ल पक्ष की तृतीया को यह पर्व समाप्त होता है। राजस्थान,गुजरात, मध्य प्रदेश और पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सों में गणगौर का ये शुभ त्यौहार बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। राजस्थान का गणगौर त्यौहार तो विश्व भर में प्रसिद्ध है।

गणगौर शब्द दो शब्दों गण और गौर के मेल से बना है। गण भगवान शिव का पर्याय है और गौर, गौरी या देवी पार्वती का पर्याय है जो सौभाग्य (वैवाहिक आनंद) का प्रतीक है। कई प्राचीन हिंदू ग्रंथ, जैसे वेद, उपनिषद और पुराण, माता पार्वती को पृथ्वी की आध्य शक्ति, पृथ्वी पर जीवन के प्रवर्तक के रूप में वर्णित करते हैं, जो ग्रह पर सभी चीजों की गति के लिए जिम्मेदार हैं। यह लोकप्रिय त्योहार गणगौर वैवाहिक निष्ठा, प्रसव और फसल का उत्सव है। पार्वती के अवतार के रूप में गणगौर माता व भगवान शंकर के अवतार के रूप में ईसर जी की पूजा की जाती है। प्राचीन समय में पार्वती जी ने शंकर भगवान को पति (वर) रूप में पाने के लिए व्रत और तपस्या की। शंकर भगवान तपस्या से प्रसन्न हो गए और वरदान माँगने के लिए कहा।पार्वती जी ने उन्हें वर रूप में पाने की इच्छा जाहिर की। पार्वती जी की मनोकामना पूरी हुई और उनसे विवाह हो गया। बस उसी दिन से कुंवारी लड़कियां मन इच्छित वर पाने के लिए ईसर और गणगौर की पूजा करती है। सुहागिन स्त्री पति की लम्बी आयु के लिए यह पूजा करती है।

गणगौर की पूजा पूरे विधिविधान से की जाती है। होलिका दहन के दूसरे दिन गणगौर पूजने वाली लड़कियां होली दहन की राख लाकर उसके आठ पिण्ड बनाती हैं एवं आठ पिण्ड गोबर के बनाती हैं। उन्हें दूब पर रखकर प्रतिदिन पूजा करती हुई दीवार पर रोली, काजल और मेहँदी की सोलह टीकी लगाती हैं। यह सुहाग पर्व है अत: इसमें श्रृंगार के विभिन्न साधनों रोली, मेहँदी और काजल का विशेष महत्व है। शीतलाष्टमी तक इन पिण्डों को पूजा जाता है। फिर मिट्टी से ईसर गणगौर की मूर्तियां बनाकर उन्हें पूजती हैं। सोलह दिन तक सुबह जल्दी उठ कर बाड़ी बगीचे में जाती है दूब व फूल लेकर आती है।दूब लेकर घर आती है उस दूब से दूध के छींटे मिट्टी की बनी हुई गणगौर माता को देती है।थाली में दही पानी सुपारी और चांदी का छल्ला आदि सामग्री से गणगौर माता की पूजा की जाती है। सुबह सुबह जब दूब लेने बगीचे में जाती हैं तो गीत गाती हैं :

**बाड़ी वाला बाड़ी खोल, बाड़ी की किवाड़ी खोल**
**छोरियाँ आई दूब ने, बाड़ी की किवाड़ी खोल ।।**

इस पर्व में माली का विशेष महत्व है। माली आधारित गीत गाये जाते हैं और माली मालिन की मिट्टी की मूर्ति बना कर उसे पूजा में भी रखा जाता है। शायद ये हमारे पूर्वजों द्वारा हमें प्रकृति से जोड़े रखने का एक तरीका था ताकि हम माली जो पूरे बगीचे की देखभाल करता है उसे पूरा सम्मान दे सकें। पूजा के लिए जल भी पूरे आदर के साथ लाया जाता है। अविवाहित व सुहागिन महिलाएँ पूरा सोलह श्रृंगार कर कुँए पर ताजा जल लेने जाती हैं। साफ-सुथरे, छोटे कलश में पानी भर उसे फूल-पत्तियों व घास से सजाया जाता है। बैंड बाजे के साथ गीत गाते हुए महिलाएँ जल के कलश को अपने सर पर रखकर घर लाती हैं। अमूल्य जल को इतनी महत्ता देने का यह उदाहरण हमारी सांस्कृतिक विरासत की उच्च कोटि का परिचायक है।

पूजा के आठवें दिन गणगौर माता के चारों तरफ मिट्टी की क्यारी बना कर उसमें ज्वारे उगाये जाते हैं। यह त्यौहार चैत्र में आता है जब नई फसल का उत्सव भी मनाया जाता। उसी के प्रतीक स्वरूप हरे-हरे ज्वारों से गणगौर की चौकी भी सुशोभित की जाती है। यहीं नही ज्वारों पर आधारित गीत भी गाये जाते हैं :

**म्हारा हरा ए जवारा ए, गेन्हुला सिरस बढया ।।**
**या तो इसरदास जी रा बाया ए, बहू गोरल सींच लिया ।।**

प्रकृति से जुडाव के ये पर्व हमें अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखने का संदेशा भी देते हैं। पूजा के आठवें दिन ईसर गणगौर की मूर्तियाँ भी बना कर स्थापित की जाती है। साथ ही माली मालिन, पोली पोलन (प्रहरी) और सूरज चाँद की मिट्टी से बनी मूर्तियाँ भी लगाई जाती है। शिव-पार्वती के पुत्र गणेश जी की भी छोटी सी

एक मूर्ति झूले में बैठा दी जाती है। इस तरह से ईसर-गणगौर का एक छोटा सा दालान जो चारों तरफ ज्वारे की हरियाली से घिरा होता है तैयार कर दिया जाता है। महिलाएं बड़े जतन से गीत गाते हुए इस सुंदर से संसार को तैयार करती हैं। कहीं **''गोर गोर गणपति , ईसर पूजे पार्वती''** के गीत सुनाई देते हैं तो कहीं विवाहिता अपने प्रियतम से गणगौर पूजने जाने की अनुमति मांगते हुए गाती हैं:

**खेलण द्यो गणगौर गणगौर,**
**भंवर म्हांने निरखण द्यो गणगौर,**
**ओजी म्हारी, सहेल्यां जोवे बाट,**
**भंवर म्हांने खेलण द्यों गणगौर,**

कई जगहों पर स्थानीय कारीगरों द्वारा तैयार की गई शिव-गौरी की छवियों या मिट्टी की मूर्तियों को भी सजाया जाता है और उनकी पूजा की जाती है। महिलाएं गौरी की मूर्तियों को विशेष रूप से इस अवसर के लिए बनाए गए नए कपड़ों से सजाती हैं और उन्हें जीवित आकृतियों की तरह बनाती हैं। कुछ राजपूत परिवार दिव्य जोड़े की स्थायी लकड़ी की छवियों की पूजा करते हैं, जिन्हें हर साल उत्सव की शुरुआत से पहले माथेरान नामक प्रतिष्ठित स्थानीय चित्रकारों द्वारा चित्रित किया जाता है। फिर इन मूर्तियों को घरों में ज्वारे और फूलों के साथ टोकरियों में रखा जाता है और हर दिन उनकी पूजा की जाती है। इस बहुप्रतीक्षित त्योहार में जौ एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है क्योंकि यह फसल का प्रतीक है। अविवाहित युवतियां भी मिट्टी के बर्तन खरीदती हैं जिन्हें स्थानीय रूप से घुड़लिया के नाम से जाना जाता है और उन्हें पारंपरिक राजस्थानी पेंटिंग में सजाती हैं। वे अपने सिर पर घुड़ीलाओं के साथ एक जलते हुए दीपक को रख कर, पारंपरिक राजस्थानी पोशाक पहन, सड़कों और गलियों में घूमते हुए एक जुलूस के रूप में निकलती हैं जो गणगौर त्यौहार का एक अभिन्न अंग है। महिलाएं अपने हाथों और पैरों को मेहंदी से बने सुंदर डिजाइनों से सजाती हैं, यह 16 दिनों तक चलने वाले इस त्यौहार की एक और लोकप्रिय प्रथा है।

गणगौर माता को घेवर और गुने का भोग लगाया जाता है। गणगौर पूजन में गुनों का विशेष महत्व है। यह मैदा,बेसन या आटे में हल्दी या पीला रंग मिलाकर बनाए जाते हैं। यह मीठे होते हैं। मान्यता है कि जितने गहने यानी गुने पार्वती जी चढ़ाए जाते हैं, उतना ही धन वैभव बढ़ता है। गुनों का आकार एक गहने की तरह होता है। पहले इसे गहना कहा जाता था, अब इसका तद्भव नाम गुना हो गया।

गीत गाने के बाद लड़कियां गणगौर की कहानी सुनती हैं। शाम को गणगौर को भोग लगाया जाता है तथा गीत गाकर पानी पिलाया जाता है :

**म्हारी गौर तिसाई ओ राज,**
**म्हारी गौरल न थोड़ो पानी पावो जी राज घाटीरी मुकुट करो।।**

रात को गणगौर की आरती की जाती है तथा लड़कियां नाचती हुई गाती हैं। गणगौर पूजन के मध्य आने वाले एक रविवार को लड़कियां उपवास करती हैं। प्रतिदिन शाम को क्रमवार हर लड़की के घर गणगौर ले जाई जाती है। जहां गणगौर का ''बिन्दौरा'' निकाला जाता है तथा घर के पुरुष लड़कियों को भेंट देते हैं। लड़कियां खुशी से झूमती हुई गाती हैं-

**ईसरजी तो पेंचो बांधे,**
**गोराबाई पेच संवार ओ राज,**
**म्हे ईसर थारी सालीछां ।।**

इस तरह एक पूरा पखवाड़ा महिलाएं और लड़कियां अपनी गणगौर के लाड़ चाव में निकाल देती हैं जहाँ वो खुद भी उनके साथ जीवन के गीत को धूमधाम से गाती हैं।

गणगौर पूजा के अंतिम दिन यानी चैत्र शुक्ल पक्ष की तृतीया को गणगौर का मुख्य पर्व मनाया जाता है। इसके एक दिन पहले गणगौर का सिंजारा किया जाता है। सिंजारा शब्द श्रृंगार का ही तद्भव रूप है। इस दिन लड़कियां मेहन्दी रचाती हैं। सोलह श्रृंगार करती हैं, नए कपड़े पहनती हैं, घर में पकवान बनाए जाते हैं। सत्रहवें दिन लड़कियां नदी, तालाब, कुंए, बावड़ी में ईसर गणगौर को विसर्जित कर विदाई देती हुई दु:खी हो गाती हैं-

**गोरल ये तू आवड़ देख, बावड़ देख**
**तन बाई रोवा याद कर ।।**

गणगौर की विदाई के बाद कई महीनों तक त्योहार नहीं आते इसलिए कहा गया है-**''तीज त्योहारा बावड़ी ले डूबी गणगौर''**। अर्थात् जो त्योहार तीज (श्रावणमास) से प्रारम्भ होते हैं उन्हें गणगौर ले जाती है। ईसर-गणगौर को शिव पार्वती का रूप मानकर ही बालाएं उनका पूजन करती हैं। गणगौर के बाद बसन्त ऋतु की विदाई व ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत होती है।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में गणगौर उत्सव दो दिन तक धूमधाम से मनाया जाता है। सरकारी कार्यालयों में आधे दिन का अवकाश रहता है। ईसर और गणगौर की प्रतिमाओं की शोभायात्रा राजमहल से निकलती है। राजस्थान पर्यटन विभाग के सौजन्य से हर वर्ष मनाए जाने वाले इस गणगौर उत्सव को देखने बड़ी संख्या में देशी-विदेशी सैनानी उमड़ते हैं। सभी बड़े उत्साह से इसमें भाग लेते हैं। शहर में पारम्परिक नृत्य और कई तरह की प्रस्तुतियां आकर्षण का केंद्र रहती हैं और साथ ही कच्ची घोड़ी, कालबेलिया, बहरूपिया, अलगोजा, गैर, चकरी नाच देखने हजारों की संख्या में लोग आते हैं। माता की सवारी के लिए जुलूस में तोप गाड़ी, सुसज्जित रथ, घोड़े और ऊंट भी शामिल रहते हैं। बैंड की धुनों के बीच शहर के बीचों बीच से सवारी निकाली जाती है। इस उत्सव

पर एकत्रित भीड़ जिस श्रृद्धा एवं भक्ति के साथ धार्मिक अनुशासन में बंधी गणगौर की जय-जयकार करती हुई भारत की सांस्कृतिक परम्परा का निर्वाह करती है उसे देख कर अन्य धर्मावलम्बी भी इस संस्कृति के प्रति श्रृद्धा भाव से ओतप्रोत हो जाते हैं। उदयपुर में भी गणगौर की शाही सवारी बड़ी नौका में निकाली जाती है। इसी प्रकार नाथद्वारा में सात दिन तक लगातार सवारी निकलती है। सवारी में भाग लेने वाले व्यक्तियों की पोशाक भी उस रंग की होती है जिस रंग की गणगौर की पोशाक होती है। सात दिन तक अलग-अलग रंग की पोशाक पहनी जाती हैं। आम जनता के वस्त्र गणगौर के अवसर पर नि:शुल्क रंगें जाते हैं। माना जाता है कि राजघरानों में रानियां और राजकुमारियां प्रतिदिन गवर की पूजा करती थी। पूजन के स्थान पर दीवार पर ईसर और गवरी के भव्य चित्र अंकित कर दिए जाते हैं। ईसर के सामने गवरी हाथ जोड़े बैठी रहती है। ईसरजी काली दाढ़ी और राजसी पोशाक में तेजस्वी पुरुष के रूप में अंकित किए जाते हैं।खूबसूरती से सजी हुई प्रतिमाएं ऐसी लगती हैं, जैसे इन लड़कियों और विवाहित महिलाओं द्वारा उन्हें सजीव रूप प्रदान किया गया हो। विवाहित महिलाओं के सिर पर रखी गई ईसर और गौरी की मूर्तियों को दोपहर में एक जुलूस में एक बगीचे, बावड़ी या जोहड़ या कुएं में ले जाया जाता है। गौरी के पति के घर चले जाने से विदाई के गीत गाए जाते हैं। गौरी की मूर्ति को जुलूस में मौजूद महिलाओं द्वारा पानी चढ़ाया जाता है। अंतिम दिन, जुलूस एक टैंक या एक कुएं के पानी में सभी मूर्तियों के विसर्जन के साथ समाप्त होता है। महिलाएँ गौरी से विदाई लेती हैं और आंसू भरी आँखों से अपने घर की ओर लौटती हैं और इस तरह गणगौर महोत्सव का समापन होता है।

– **डॉ प्रिया मारवाल,** Asst. Professor

# होली V/s बॉलीवुड

होली आये और फिल्मी गानों की चर्चा न हो तो त्योहार का मजा फीका रहता है। हमारे बॉलीवुड ने फिल्मों में होली के खूब रंग भर कर दर्शकों का मनोरंजन किया है। किसी फिल्म में यदि होली पर गाना है तो उसका हिट होना निश्चित है। आखिर ऐसा क्यों न हो क्योंकि होली का त्योहार हमारी रंग-बिरंगी संस्कृति में रचा-बसा जो है। इसलिए फिल्म वालों ने हम भारतीयों की नब्ज को पहचान कर कोई कमी नहीं रखी। अब बात करेंगे ऐसी फिल्मों व गानों की जिनमें होली का समावेश हुआ है—

**फिल्म कटी पंतग** (1970) में गाना **'आज न छोड़ेंगे'** जिसे राजेश खन्ना और आशा पारीक पर फिल्माया गया। इसे गाया आशा भोसले और किशोर कुमार ने।

**फिल्म-पराया धन** (1971) में गाना 'होली आई रे, होली आई रे' को मन्ना डे व आशा भोसले ने बड़ी ही खूबसूरती से गाया है।

**फिल्म आपकी कसम** का गाना **'जय जय शिवशंकर कांटा लगे न कंकर'** को लता मंगेशकर व मन्नाडे ने गाया, इसे सुपर स्टार राजेश खन्ना व मुमताज पर फिल्माकर यादगार बना दिया।

**फिल्म शोले** (1975) का गाना **'होली के दिन'** को भला कौन नहीं जानता गायक किशोर कुमार और लता मंगेशकर के गाये गाने को धर्मेन्द्र और हेमा मालिनी ने फिल्म में मोज मस्ती करके जीवंत बना दिया।

**फिल्म सिलसिला** (1981) में अमिताभ के गाये गाने **'रंग बरसे भीगी चुनरिया'** का जवाब नहीं। फिल्म में अमिताभ-जया बच्चन, रेखा व संजीव कुमार ने अभिनय करते हुए खूब होली खेली।

**फिल्म बागवान** (2003) में **'होली खेले रघुवीर अवध में'** गाने में अमिताभ बच्चन व हेमा मालिनी ने होली के त्योहार पर अपनी तीन पीढ़ियों व पड़ोसियों के साथ होली खेली। इसमें बुजुर्ग जोड़े ने भी होली के त्योहार का भरपूर आनन्द लिया। इस गाने को गाया उदित नारायण, अमितभ बच्चन, सुखविन्दर सिंह और अलका याज्ञनिक ने।

**फिल्म वक्त** (2005) में गाना **'डू मी ए फेवर, लेट्स प्ले होली'** की आवाज अनुम मलिक और सुनिधि चोहान ने अलग अंदाज में दी। इसे अक्षय कुमार और प्रियंका चौपड़ा पर फिल्माया गया।

**फिल्म ये जवानी ये दीवानी** (2013) में गाना **'बलम पिचकारी'** को गायक शाल्मनी खोलगड़े और विशाल ददलानी ने जिस खूबसूरती से गाया उतनी ही बखूबी से दीपिका पादुकोन और रणवीर कपूर ने अभिनय कर तूफान ला दिया। इस गाने में दोस्ती, भाग और डांस ने अलग ही ऊँचाई छू ली।

**फिल्म बदरीनाथ की दुल्हनिया** (2017) में गाना **'बदरी की दुल्हनिया'** को आवाज दी देव नेगी और नेहा कक्कड़ ने। इसे वरुण धवन और आलिया भट्ट पर फिल्माया गया। गाने के भाव अच्छे है तथा युवाओं को डांस फ्लोर की ओर खींचने में सफल रहा है।

इला अरुण ने **'होलिया में उड़े रे गुलाल'** गाकर जो भी कमी रही उसे पूरा कर दिया। यह गाना भारतीय जनमानस ने खूब पसंद किया।

आप इन गानों को होली पर बजते हुए तो सुनेंगे ही और इनका आनन्द, रंग-गुलाल-मिठाई-ठंडाई के साथ लेना न भूलें।

**-शोभिता कुमावत,** सवाई माधोपुर

# गुरु नानक देव जी

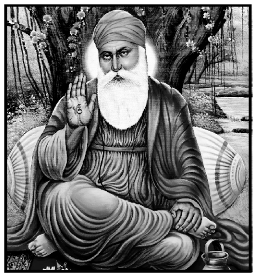

नानक साहिब का जन्म 15 अप्रैल 1469 को पंजाब के तलवंडी में हुआ था, जो कि अब पाकिस्तान में हैं। इस जगह को ननकाना साहिब के नाम से भी जाना जाता है। गुरु नानक देव जी का जन्म ऐसे समय में हुआ था जब लोग अंधविश्वास और आडंबरों को ज्यादा मानते थे।

हिन्दू परिवार में जन्मे गुरु नानक ने सभी धर्मों का व्यापक रूप से अध्ययन किया जिसकी वजह से वो बचपन से ही आध्यात्मिक और ज्ञानी हो गए थे। वो किसी भी तरह के अंधविश्वास को नहीं मानते थे उनका कहना था कि परंपराओं को मानने की बजाय अपने ज्ञान और गुणों को बढ़ाना चाहिए।

वह हमेशा मानव सेवा ही करते रहे। गुरु नानक देव ने बिना सन्यास धारण किए अध्यात्म की राह को चुना था। उनका मानना था कि अध्यात्म की राह पर चलने के लिए व्यक्ति को सन्यासी बनने और अपने कर्तव्यों को अधूरा छोड़ने की जरूरत नहीं है

नानक ने 30 सालों तक भारत, तिब्बत और अरब समेत कई जगहों पर आध्यात्मिक यात्रा की। इस दौरान उन्होंने सारे धर्मों के बारे में बहुत अध्ययन किया और गलत बातों के प्रति लोगों को जागरुक करना भी शुरू किया। नानक ने अपने विद्रोही विचारों से साधुओं और मौलवियों पर सवाल उठाना शुरू कर किया। उनका कहना था कि कोई भी रस्म-रिवाज़ निभाने के लिए पुजारी या मौलवी की जरूरत नहीं है क्योंकि ईश्वर एक है और हर इंसान ईश्वर तक स्वंय पहुंच सकता है।

नानक लोगों के अंतर्मन में बदलाव लाना चाहते थे। वो आजीवन लोगों यह समझाते रहे कि लोभ, लालच बुरी बलाएं हैं। वो लोगों को प्रेम, एकता, समानता और भाई-चारा का संदेश देते थे।

गुरु नानक देव ने अपने अंतिम दिन पंजाब के करतारपुर में लोगों को शिक्षा देते हुए गुजारे। उनका उपदेश सुनने के लिए दूर-दूर से लोग आते थे। 974 भजनों के रूप में अमर किया गया, जिसे सिख धर्म के लोग गुरु ग्रंथ साहिब के रूप में मानते हैं।

गुरु नानक ने कई तरह के धार्मिक सुधार किए जिनमें से एक जाति व्यवस्था को खत्म करना था। उन्होंने लोगों के मन में ये भावना स्थापित की कि हर इंसान एक है, चाहे वो किसी भी जाति या लिंग का हो। गुरू नानक जी को विश्व भर में सांप्रदायिक एकता, सच्चाई, शांति, सदभाव के ज्ञान को बांटने के लिए याद किया जाता है।

**गुरु नानक जी की सीख : नाम जपो**- गुरु नानक जी ने कहा है- ***'सोचै सोचि न होवई, जो सोची लखवार। चुपै चुपि न होवई, जे लाई रहालिवतार।'*** यानी ईश्वर का रहस्य सिर्फ सोचने से नहीं जाना जा सकता है, इसलिए नाम जपे। नाम जपना यानी ईश्वर का नाम बार-बार सुनना और दोहराना।

**किरत करो**- यानी ईमानदारी से मेहनत कर आजीविका कमाना। श्रम की भावना सिख अवधारणा का भी केंद्र है। इसे स्थापित करने के लिए नानक जी ने एक अमीर जमींदार के शानदार भोजन की तुलना में गरीब के कठिन श्रम के माध्यम से अर्जित मोटे भोजन को प्राथमिकता दी थी।

मक्का पहुंचने से पहले नानक देव जी थककर आरामगाह में रुक गए। उन्होंने मक्का की ओर चरण किए थे। यह देखकर हाजियों की सेवा में लगा जियोन नाम का शख्स नाराज हो गया और बोला-आप मक्का मदीना की तरफ चरण करके क्यों लेटे हैं? नानक जी बोले- 'अगर तुम्हें अच्छा नहीं लग रहा, तो खुद ही चरण उधर कर दो, जिधर खुदा न हो।' नानक जी ने जियोन को समझाया- हर दिशा में खुदा है। सच्चा साधक वही है जो अच्छे काम करता हुआ खुदा को हमेशा याद रखता है।

**वंड छको**- नानक जी ने कहा समर्पण का भाव और विश्वास की ताकत है। सिख इसी आधार पर आय का दसवां हिस्सा साझा करते हैं, जिसे दसवंध कहते हैं। इसी से लंगर चलता है। 'जो कुछ है वह परमबह्र का है, मेरा क्या है?'

नानक जी अपने शिष्य मरदाना के साथ कंगनवाल पहुंचे तो उन्होंने देखा कि कुछ लोग जनता को परेशान कर रहे हैं। नानक जी ने उन्हें आशीर्वाद दिया-**बसते रहो**। दूसरे गांव पहुंचे, तो अच्छे लोग दिखे, गांव वालों को नानक जी ने आशीर्वाद दिया-**उजड़ जाओ**। इस पर मरदाना को आश्चर्य हुआ। उसने पूछा ता नानक जी बोले- बुरे लोग एक जगह रहें, ताकि बुराई न फैले और अच्छे लोग फैलें ताकि अच्छाई का प्रसार हो।

नानक जी हरिद्वार गए, वहां लोगों को गंगा किनारे पूर्व में अर्घ्य देते देखा। नानक इसके उलट पश्चिम में जल देने लगे। लोगों ने पूछा-आप क्या कर रहे हैं? नानक जी ने पूछा, आप क्या कर रहे हैं? जवाब मिला, हम पूर्वजों को जल दे रहे हैं। नानक जी बोले-'मैं पंजाब में खेतों को पानी दे रहा हूं।' लोग बोले- इतनी दूर पानी खेतों तक कैसे जाएगा? इस पर नानक जी बोले- जब पानी पूर्वजों तक जा सकता है, तो यह खेतों तक क्यों नहीं जाएगा? मानों तो ईश्वर यहां मौजूद हर कण और हर व्यक्ति में है।'

**चार बुराइयों से दूर रहो** : गुरु नानक देव जी ने अपने अनुयायियों से उन चार बुराइयों को दूर करने के लिए कहा जो भ्रम (माया) की ओर ले जाती हैं जो अंतत: मोक्ष की प्राप्ति के मार्ग में बाधा का काम करती ये वह चार बुराइयां है-**क्रोध, लोभ, मोह और वासना।**

गुरु साहब ने 'गुरुग्रंथ साहब' नामक ग्रंथ की रचना पंजाबी भाषा और गुरुमुखी लिपि में की। इसमें कबीर, रैदास व मलूकदास जैसे भक्त कवियों की वाणियाँ सम्मिलित हैं। गुरु नानक देव जी का 70 वर्ष की आयु में 22 सितंबर, 1539 को निधन हो गया। आज, सिख धर्म 25 मिलियन से अधिक अनुयायियों के साथ दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा धर्म है।

गुरुनानक देवजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व जितना सरल, सीधा और स्पष्ट है, उसका अध्ययन और अनुसरण भी उतना ही व्यावहारिक है। जन्म साखियों, फारसी साहित्य एवं अन्य ग्रंथों के अध्ययन से यह सिद्ध होता है कि गुरुनानक उदार प्रवृत्ति वाले स्वतंत्र और मौलिक चिंतक थे। एक सामान्य व्यक्ति और एक महान आध्यात्मिक चिंतक का एक अद्भुत मिश्रण गुरु नानकदेवजी के व्यक्तित्व में अनुभव किया जा सकता है। ''वे नबी भी थे और लोकनायक भी, वे साधक भी थे और उपदेशक भी, वे शायर एवं कवि भी थे और ढाढ़ी भी, वे गृहस्थी भी थे और पर्यटक भी।''

# रंगों का पर्व होली-2024

होली का पर्व हिन्दू धर्म के प्रमुख त्यौहारों में से एक है। फाल्गुन पूर्णिमा की रात को होलका दहन किया जाता है। होली का पर्व भारत वर्ष का सांस्कृति, धार्मिक और पारम्परिक त्यौहार है और इसे भारत के साथ ही अन्य कई देशों में भी पूरे उत्साह के साथ मनाया जाता है। होली पर लोग रंगों और गुलाल से भाईचारे और सद्भावना से इस त्योहार को मनाते हुए एक-दूसरे को बधाई और शुभकामनाएं देते हैं।

**होलिका मुहूर्त**

इस वर्ष फाल्गुन पूर्णिमा तिथि 24 मार्च को सुबह 9.57 मिनट पर शुरू होगी और अगले दिन यानि 25 मार्च को दोपहर 12.30 मिनट तक रहेगी, इसलिये होलिका दहन का पर्व इस वर्ष 24 मार्च रविवार को ही मनाया जाएगा। 24 मार्च को होलिका दहन वाले दिन भद्रा लग रही है जो कि रात को 11 बजकर 13 मिनट तक रहेगी। भद्रा काल में होनिका दहन नहीं होता इसलिए होलिका दहन भद्रा समापित के बाद यानि रात्रि 11.13 मिनिट से लेकर रात्रि 12 बजकर 27 मिनिट तक के बीच में किया जाना उचित रहेगा। होलिका दहन के बाद दूसरे दिन यानि 25 मार्च को धुलंडी का पर्व पूरे उत्साह से मनाया जाएगा।

**होली के उपाय**

होली पर अपने कार्यों में सफलता और समस्याओं से मुक्ति पाने के लिए कुछ विशेष प्रकार के उपायों का प्रयोग किया जाता है, आइये उन उपायों को जानते हैं-

- गोमती चक्र, कौडियाँ और बताशे जलती होली में स्वयं पर से 5 या 7 बार वार कर डालने से जातक के जीवन की बाधा भी स्वाहा हो जाती है।
- यदि सेहत बार-बार खराब हो तो होलिका दहन की बची राख को रोगी के तकिये के नीचे रख दें। इससे पुरानी बीमारी ठीक हो जाएगी।
- यदि आपको व्यापार व नौकरी में परेशानी आ रही हो तो होलिका दहन के बाद एक जटा वाला नारियल मंदिर या होलिका दहन वाली जगह पर जरूर चढ़ाएं।
- होली दहन के समय परिवार के सभी सदस्यों को होलिका की तीन या सात परिक्रमा करनी चाहिए। परिक्रमा करते समय होलिका में चना, मटर, गेंहूं, अलसी को भी डालना चाहिए। ऐसा करने पर स्वास्थ्य लाभ के साथ ही धन लाभ होने के भी योग बनते हैं।
- होली के दूसरे दिन होली की राख को घर लाकर उसमें थोड़ी सी राई और मोटा नमक मिलाकर किसी बर्तन में रख लें, तदपश्चात ये बर्तन घर में किसी सुरक्षित जगह रखें। इस उपाय से नजर दोष और बुरे समय से मुक्ति मिल सकती है, पैसों की तंगी दूर होती है, इससे गृह कलह और आर्थिक बाधाएं भी दूर होती हैं।
- होलिका की राख को एक लाल रुमाल में बाध लें और उसे अपनी तिजोरी या पर्स में रखें, इससे संचित धन बढ़ता है।
- होलिका की राख शरीर में लगाकर गर्म जल से स्नान करने से नकारात्मक प्रभाव निर्मूल हो जाता है।
- होली की राख को मस्तक और गले पर लगाएं, इससे स्वास्थ्य सुख बना रहेगा।
- आप होली के दिन एक काले रंग का कपड़ा लें और उसमें काली हल्दी को बांध दें, घर का परिवेश सकारात्मक हो जाएगा और कई परेशानियों से मुक्ति मिल जायेगी।
- शीघ्र विवाह के योग के लिए होली के दिन सुबह एक साबुत पान पर साबुत सुपारी एवं हल्दी की गांठ शिवलिंग पर चढ़ाए, इससे लाभ होगा।
- होली के दिन चांदी के पात्र में कच्चा दूध डालकर चन्द्रमा को अर्घ्य दें, पति-पत्नी के आपसी संबंधों में मधुरता आयेगी।
- जिस दिन होलिका का दहन किया जाता है उस दिन आप होलिका दहन में आटा और जौ चढ़ाएं, इस उपाय से घर के क्लेश मिट जाते हैं।
- अगर घर में किसी को बहुत गुस्सा आता है तो होली के दिन एक मुट्ठी पिसा हुआ नमक लेकर सिर के ऊपर तीन बार घुमाएं और घर के बाहर फेंक दें। होली के दिन से अगले तीन दिनों तक यह प्रक्रिया करते रहें। व्यक्ति का गुस्सा शांत होने लग जाएगा।

**-डॉ योगेश, ज्योतिषाचार्य, मानसरोवर, जयपुर।**
M.:8058169959

## कुमावत समाज चेन्नई के चुनाव सम्पन्न

श्री कुमावत समाज मुलैकड़े चेन्नई के चुनाव सम्पन्न हुए जिसमें निम्न पदाधिकारीगण निर्वाचित हुए-

अध्यक्ष -श्रीमान गेवरराम जी पिलोदिया, उपाध्यक्ष -श्रीमान धर्मीचंद जी अडाणिया, कालूराम जी गोठवाल, मदनलाल जी दुबलदिया, कोषाध्यक्ष -श्रीमान पुकाराम जी कारीवाल, सहसचिव - श्रीमान अमराराम जी पिलोदिया, सचिव- श्रीमान पुकाराम जी मानणिया

सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को 'कुमावत इंडिया' पत्रिका की ओर से बहुत-बहुत बधाई।

वि/1 श्री महेश चन्द जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/2 श्री नीरज धुन्धारिया, आनन्दपुरी, जयपुर
वि/3 श्री मनीष खोवाल कुमावत एडवोकेट, जयपुर
वि/4 श्री मनोज कुमार सिरसवा, जयपुर
वि/5 श्री शंकर लाल जायलवाल, टोंक रोड, जयपुर
वि/6 श्री यतेन्द्र अजमेरा, त्रिमूर्ती सर्किल, जयपुर
वि/7 श्री राकेश चन्द सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/8 श्री संदीप नागा, बापू नगर, जयपुर
वि/9 श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, भौरोदिया जयपुर
वि/10 श्री मोहन कुमार घोड़ीवाल, जयपुर
वि/11 श्री नवल सरथल्या, महावीर नगर, जयपुर
वि/12 श्री पंकज कुमावत, वैरा झोटवाड़ा, जयपुर
वि/13 श्री चेतन कुमावत, डीसीएम, जयपुर
वि/14 श्री मनोज माचीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/15 श्री दीपक सिरोहिया, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/16 श्री लक्ष्मी नारायण घोड़ीवाल, जयपुर
वि/17 श्री योगेश वर्मा, खड़गटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/18 श्री शैलेन्द्र खटगटा, टोंक रोड, जयपुर
वि/19 श्री विनोद बालोदिया, दुर्गापुरा जयपुर (स्व.)
वि/20 श्री ओमकार मल घोड़ेला, रींगस रोड, जयपुर
वि/21 श्री रामपाल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/22 श्री रामप्रकाश बेरा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/23 श्री मोहनलाल घोड़ेला, नींदड़, जयपुर
वि/24 श्री कालूराम होदकास्या, नींदड़, जयपुर
वि/25 श्री जयनारायण मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/26 श्री महेंद्र खरोलिया, चांदपोल बाजार, जयपुर
वि/27 डॉ. सीताराम नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/28 श्री शंकरलाल मामोड़िया, 22 गोदाम, जयपुर
वि/29 श्री रामस्वरूप खोराणिया, जयपुर
वि/30 श्री नरेंद्र कुमार आर्य, ब्यावर, अजमेर
वि/31 श्री चेनसुख बड़ीवाल, बगरू, जयपुर
वि/32 श्री चांदमल कुमावत (घोड़ेला), मुंबई
वि/33 श्री राजसिंह गैदर, पांचावाला, जयपुर
वि/34 श्री मनोज ब्याडवाल, श्रीराम नगर, झोटवाड़ा
वि/35 श्री गोपाल मारवाल, श्रीमाधोपुर, सीकर
वि/36 श्री मनीष मारवाल, निवारू रोड, जयपुर
वि/37 श्रीरूप सिंह कारगवाल, जयपुर
वि/38 श्री दया प्रकाश जलांधरा, इंदौर
वि/39 श्री नवीन कुमार वर्मा भौंरोदिया, इंदौर
वि/40 श्री राजेंद्र प्रसाद, तमिलनाडु
वि/41 श्री शिव भगवान चेजारा, सिरस्वा, सीकर
वि/42 श्री तेज प्रकाश नागा, जोबनेर, जयपुर
वि/43 श्री पृथ्वीराज जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/44 श्री मोहन कुमार बालोदिया, जयपुर
वि/45 श्री पुरुषोत्तम लाल घोड़ेला, जयपुर
वि/46 श्री ललित स्वरूप पोडेला, जयपुर
वि/47 श्री विजय कुमावत (भौरोंदिया), जयपुर
वि/48 श्री अरविंद सिरस्वा, पचार, सीकर
वि/49 श्री मूलचंद खोवाल, जयपुर
वि/50 श्रीमती शशि वर्मा, धुमुनिया, दुर्गापुरा, जयपुर
वि/51 श्री राजेंद्र जूनवाल, टोंक फाटक, जयपुर

## विशिष्ठ संरक्षक

वि/52 श्री सतीश चंद खाटूवाल, जयपुर
वि/53 श्री नन्द किशोर सिरस्वा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/54 श्री संतोष खरनारिया कुमावत, अजमेर
वि/55 श्री प्रमोद कुडावलिया, छत्तीसगढ़,
वि/56 श्री मनोज बड़ीवाल, रायपुर, छत्तीसगढ़
वि/57 श्री श्रीराम नीमिवाल, जयपुर
वि/58 श्री भीवाराम दम्बीवाल, निर्माण नगर, जयपुर
वि/59 श्री पन्नाालाल सिरस्वा, निर्माण नगर, जयपुर
वि/60 श्री रामस्वरूप कुमावत, बड़ीवाल, मुम्बई
वि/61 श्री हेमेंद्र सिंह गैदर, टोंक रोड, जयपुर
वि/62 श्री साधुलाल चेजारा (सिरस्वा), जयपुर
वि/63 श्री गोपाललाल बासनीवाल, जयपुर
वि/64 श्री मोहनलाल मामोड़िया, जयपुर
वि/65 श्री रामकुमार बिरथलिया, जयपुर
वि/66 श्री जगदीश कुमावत
वि/67 श्री मुकेश कु. कुदीवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/68 श्री रोहिताश मोरवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/69 श्री शुभकरण किरोड़ीवाल, सूरत
वि/70 श्री नान्छीलाल कुद्दीवाल, जयपुर
वि/71 श्री रमेश चंद माचीवाल, त्रिनगर, दिल्ली
वि/72 श्री राधेश्याम घासोलिया, दिल्ली
वि/73 श्री हंसराज मारवाल, ब्यावर
वि/74 श्री मेघराज सिरस्वा, छत्तीसगढ़
वि/75 श्री सूरजमल अनावड़िया, लाल कोठी, जयपुर
वि/76 श्री छीतरमल धुंधारिया, निवारू रोड, जयपुर
वि/77 श्री रामगोपाल खोराणिया, सोडाला, जयपुर
वि/78 श्री हरिशंकर राजौरा, जयपुर
वि/80 डॉ. प्रवीण कुमार मारवाल, झुंझुनूं
वि/81 श्री अर्जुन लाल धुन्धारिया, जयपुर
वि/82 श्री ओम प्रकाश धुन्धारिया, जयपुर
वि/83 श्री गोविंद नारायण तांगड़ा, जयपुर
वि/84 श्री सुरेंद्र सिंह तारकसी, बापू नगर, जयपुर
वि/85 श्री माधव दास बालोदिया, जयपुर
वि/86 श्री मोहित धुन्धारिया, जयपुर
वि/87 श्री बाबूलाल मंडावरा, जयपुर
वि/88 श्री मनीष वर्मा (सिरस्वा), दुर्गापुरा, जयपुर
वि/89 श्री हेमांक खड़गटा, मोती डूंगरी, जयपुर
वि/90 श्री कैलाश जलान्धरा, माल की ढाणी, दूदू
वि/91 श्री लोकेश जंहाजपुरिया, नंदपुरी, जयपुर
वि/92 श्री नन्दकिशोर आसीवाल, रिंगस, सीकर
वि/93 श्री बाबूलाल धुन्धारिया, वीकेआई, जयपुर
वि/94 श्री रामसिंह बैथाड़िया, तुलसी सेन्ट्रल मैन बाजार, सांगानेर
वि/95 श्री मदन लाल कुमावत, निर्माण नगर, जयपुर
वि/96 श्री नरेंद्र मामोडिया, अशोक नगर, उदयपुर
वि/97 श्री बाबूलाल कुमावत, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/98 श्री रमेश मारवाल, खातीपुरा, जयपुर
वि/99 श्री प्रहलाद नारायण कुमावत, जयपुर
वि/100 श्री सत्यनारायण कुमावत, जयपुर
वि/101 श्री दीपेश टी. मंडावरा, जयपुर
वि/102 श्री राकेश कुमावत (एडवोकेट), बरकत नगर, जयपुर
वि/103 श्री ओमप्रकाश कुमावत, जयपुर
वि/104 श्री रमेश चन्द ब्याड़वाल, नई दिल्ली
वि/105 डॉ. एन.के. कुमावत, लालकोठी, जयपुर
वि/106 श्री राम प्रसाद छापोला, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/107 श्री गिरधारी लाल सिंघनवाल, उदयपुर
वि/108 श्री राकेश कुमावत (धनारिया), उदयपुर
वि/109 श्री बाबूलाल वर्मा (ब्याड़वाल), नई दिल्ली
वि/110 श्री कन्हैयालाल खण्डारिया, जयपुर
वि/111 डॉ. महेश कुमार जालवाल, जयपुर
वि/112 डॉ. श्रीमती श्यामा कुमावत, उदयपुर
वि/113 श्री महेश कुमार कुमावत, किशनगढ़
वि/114 श्री मुकेश वर्मा (मरोड़िया), जयपुर
वि/115 श्री जयकिशन कुमावत (सोकिल), चौमूं
वि/116 श्री गजेंद्र मारवाल, सांगानेर, जयपुर
वि/117 श्री सुनील तोंदवाल, वीकेआई, जयपुर
वि/118 श्री मदनलाल जलान्धरा, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/119 श्री सुमित कुमार घोड़ेला, मुंबई
वि/120 श्री ओम प्रकाश का कारगवाल, ब्यावर
वि/121 श्री प्रेमचन्द कुमावत (बैरा), झोटवाड़ा, जयपुर
वि/122 श्री योगेश वर्मा, मुम्बई
वि/123 श्री राजेश धूंधारिया, डूंडलोद कॉलोनी, जयपुर
वि/124 श्री सुनील प्रकाश वर्मा, मुम्बई
वि/125 श्री उम्मेद सिंह नन्दीवाल पुत्र श्री जी.एस. नन्दीवाल, जयपुर
वि/126 श्री रामलाल बैथाड़िया
वि/127 श्री लोकेन्द्र बालोदिया, जयपुर
वि/128 श्री कुमार गौरव कुमावत, कोटा
वि/129 श्रीमती मेघना कुमावत, जयपुर
वि/130 श्री गोपाल लाल कुण्डलवाल, जयपुर
वि/131 श्री दामोदर लाल जलान्दरा, जयपुर
वि/132 डॉ. पी.एम. कुमावत, उज्जैन
वि/133 श्री विमल कुमावत, जयपुर
वि/134 श्री महेन्द्र सिंह, बापूनगर, जयपुर
वि/135 श्री गोपाल लाल-सीताराम, जयपुर
वि/136 श्री रुपेश मारोठिया, बरकतनगर, जयपुर
वि/137 श्री घनश्याम देवतवाल, पटेल कॉलोनी, जयपुर
वि/138 श्री लक्ष्मीनारायण सिरस्वा, मुरलीपुरा, जयपुर
वि/139 श्री प्रहलादराय नोखवाल, भदाल, गोविन्दगढ़
वि/140 श्री घनश्याम खाटूवाल, ढोडसर
वि/141 श्री मुकेश कारगवाल, बरकत नगर, जयपुर
वि/142 श्री कैलाश खटोड़, गजसिंहपुरा, गोपालपुरा बाईपास, जयपुर
वि/143 श्री संजीव कुमार वर्मा, मानसरोवर एक्स., जयपुर
वि/144 श्री रामेश्वर बम्बोरिया, पवन टॉवर, सोडाला, जयपुर
वि/145 श्री राकेश कुमावत,(आसीवाल), बनीपार्क, जयपुर
वि/146 श्री यतेन्द्र सिंह, खिरणी फाटक, जयपुर
वि/147 श्री प्रारूप कुमावत, रांकड़ी, जयपुर
वि/148 श्री शिवदयाल धुंधारिया, सीकर रोड, जयपुर
वि/149 श्री छीतरमल मारवाल, झोटवाड़ा, जयपुर
वि/150 श्री कैलाश घोड़ावड़, सूरत
वि/151 श्री गणेश लाल कुमावत, देवी नगर, जयपुर
वि/152 श्री ओम प्रकाश वर्मा, अलथान रोड, सूरत

## ''कुमावत इंडिया'' पत्रिका परिवार की ओर से सभी दिवंगत आत्माओं को अश्रुपूरित श्रद्धांजलि

19 फरवरी श्रीमती श्रवणी देवी मोरवाल, खातीपुरा रोड, जयपुर
19 फरवरी श्रीमती संतोष देवी पत्नी श्री रामेश्वर मारवाल, आसलपुर वाले, जयपुर
27 फरवरी श्रीमती भंवरी देवी पत्नी स्व. श्री रामचन्द्र कुदीवाल, बगरू, जयपुर
27 फरवरी श्री सुशील कुमावत पुत्र श्री पांचूराम जी मामोड़िया, जयपुर
28 फरवरी श्रीमती जवाहरी देवी पत्नी स्व. श्री प्रभुदयाल जी, लोहरवाड़िया, झोटवाड़ा, जयपुर
28 फरवरी श्रीमती गुलाब देवी पत्नी स्व. श्री भंवरलाल खोराणिया, सांगानेर, जयपुर
29 फरवरी श्रीमती सुशीला कुमावत, रोजड़ी, जयपुर
1 मार्च श्री बृद्धिचन्द मारवाल पुत्र श्री लक्ष्मीनारायण, रोजदा, जयपुर
2 मार्च श्रीमती केसर देवी पत्नी स्व. श्री मक्खन चन्द दोराया, कालवाड़ रोड, जयपुर
2 मार्च श्रीमती नाथी देवी पत्नी स्व. श्री गुलाबचन्द घोड़ेला, सामोद, जयपुर
2 मार्च श्रीमती छोटा देवी पत्नी स्व. श्री चौथमल जी भोरोदिया, सोडाला, जयपुर
3 मार्च श्री छितरमल जी खोराणिया मोतीबंधा, माचड़ा
4 मार्च श्रीमती बीना देवी पत्नी श्री लालचन्द जी बबेरीवाल, सांगानेर, जयपुर
5 मार्च श्री उमरावजी सिरस्वा, कुतरों की ढाणी, सांगानेर, जयपुर
7 मार्च श्री प्रभाती लाल जी, कॉलेज मोड, कालाडेरा, चौमूं, जयपुर
8 मार्च श्री कमल वर्मा पुत्र श्री गणेश नारायण खोवाल, लालकोठी योजना, जयपुर
8 मार्च श्री चंदराम उर्फ चन्द्राराम रोहीवाल (कुमावत), निमाज (ब्यावर)
8 मार्च श्री दिनेश कुमार मानणिय, नीमच माता, उदयपुर
8 मार्च श्री जमनाशंकर झालवार, कुमावतपुरा, उदयपुर
9 मार्च श्री बद्री प्रसाद कुमावत (जलान्द्रा)
9 मार्च श्रीमती सीता गीदड़, मानपुरा, चित्तौड़
10 मार्च श्री लाल चन्द जी भदाणिया, सिवाड़ एरिया, बापू नगर, जयपुर
12 मार्च श्री गोपाल बालोदिया, जयपुर
14 मार्च श्रीमती गुलाब देवी पत्नी स्व. श्री नाथूलाल पारमवाल, उदयपुरकलां व सिलोरा (111 वर्षीया)
14 मार्च श्री गणेश लाल जी मारवाल, गुढ़ा बेरसल, जयपुर
15 मार्च श्रीमती राजन देवी पत्नी श्री गुलाब चन्द, अजमेर रोड, जयपुर
16 मार्च श्री धमेन्द्र चन्नोरिया, व्याख्याता, बांसवाड़ा

# विवाह योग्य युवक-युवतियों की सूची

## युवक

| नाम | शिक्षा | व्यवसाय | जन्म | ऊंचाई | गौत्र | | | | संपर्क सूत्र मो. नंबर | स्थान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | स्वयं | माता | दादी | नानी | | |
| प्रकाश | M.Sc.(Agro) | SRF | 7.5.94 | - | मारवाल | संगाटिया | होदकास्या | सरस्वा | 8560951034 | जोबनेर |
| मोहित | M.A., MBA Diploma | ICICI Assi. Manager | 26.12.97 | - | लोहरवाड़िया | सिरस्वा | कारगवाल | जलान्दरा | 9413072495 | सीकर |
| आयुषसिंह | B.Com. | Deutschi Bank Jpr | 22.10.94 | 5’9’’ | घोड़ेला | तूंदवाल | जलान्दरा | खोराणिया | 9983358105 | जयपुर |
| बालचन्द | M.Com. | Pvt. | 26.4.92 | - | अनावड़िया | जालवाल | खटोड़ | बबेरीवाल | 9799864021 | पाली |
| डॉ. विजय | MBBS | - | 23.11.93 | 5’11’’ | खोराणिया | ब्याड़वाल | होदकास्या | तूंदवाल | 7976119598 | चौमूं |
| संदीप | B.Tech.(EE) | JEN JVVNL | 23.7.97 | 5’8’’ | खोवाल | तूंदवाल | मारवाल | दिलीवाल | 9680416206 | जयपुर |
| डॉ. कृष्णकांत | MBBS | Pvt. Hospital | 2.7.95 | 5’7’’ | किरोड़ीवाल | मारवाल | घोड़ेला | तूंदवाल | 9001972560 | झुंझुनूं |
| रवि | B.Tech. (Mech) | Locopylate Indian Railway | 13.7.94 | 5’7’’ | कुण्डलवाल | लोहरवाड़िया | सिरस्वा | घोड़ेला | 9602335211 | जयपुर |
| अमित | B.Sc.(Ag.) | Pvt. Job. | 18.4.96 | 5’6’’ | गुड़ीवाल | सारड़ीवाल | तूंदवाल | जलान्दरा | 9462219638 | जयपुर |
| चेतन | M.A. | Electricion | 1.11.98 | 5’6’ | उजीवाल | आचीन्दा | किरोड़ीवाल | घोड़ेला | 9001437445 | सीकर |
| अजय | B.Sc. | Job in Dubai | 2.12.96 | 5’7’’ | घोड़ेला | कण्डेरीवाल | मारवाल | मारोठिया | 9828995333 | जयपुर |
| कार्तिक | Diploma Raiation | Pvt. Job. | 27.11.96 | 5’8’’ | मारवाल | बालोदिया | तूंदवाल | अनावड़िया | 7877144585 | जयपुर |
| जटाशंकर | B.Sc. Nurssing | Nursing Officer | 7.9.95 | 5’8’’ | जलान्दरा | मारोठिया | कारगवाल | सिरस्वा | 9694760722 | सीकर |
| मनीष | BCA | Self Employee | 18.12.91 | 5’6’’ | मोरवाल | सिरोहिया | नेमीवाल | धमुनिया | 9667190718 | जयपुर |
| सीताराम | M.A., B.Ed. | 1 grade Teacher Govt. | 10.10.89 | 5’7’’ | घोड़ेला | बबेरीवाल | जलान्दरा | होदकास्या | 9928390765 | सीकर |
| दीपेन्द्र | B. Tech.(CS) | Teacher | 8.2.91 | 5’8’’ | इंथारा | टॉक | सलवाड़िया | अजमेरा | 9413467771 | उदयपुर |
| सचिन | B.Sc. Nursing D.Pahrma | Medical shop | 19.2.91 | 5’9’’ | दम्बीवाल | मारवाल | आसीवाल | धमुनिया | 9929125888 | जयपुर |
| कपिल(तलाकशुदा) | MA | Faculty of Geography | 28.12.93 | 5’8’’ | बेथाड़िया | घोड़ेला | मारवाल | उदयवाल | 9460971906 | ब्यावर |
| कुनाल | M.Com. | Accountant | 21.1.97 | 5’2’’ | घोड़ेला | धुंधारिया | होदकास्या | बबेरवाल | 9309448137 | जयपुर |

## युवतियाँ

| नाम | शिक्षा | व्यवसाय | जन्म | ऊंचाई | गौत्र | | | | संपर्क सूत्र मो. नंबर | स्थान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | स्वयं | माता | दादी | नानी | | |
| रेखा | M.Com.(Eco.) | Pvt. Sector | 13.4.98 | 5’2’’ | कोलूगरिया | तूंदवाल | कारगवाल | बबेरवाल | 9352867517 | जयपुर |
| रीतू | B.Sc.(Fashion Deg.) | Pvt. Job. | 16.2.97 | 5’5’’ | बरोदिया | वनावड़िया | सोकल | करोड़ीवाल | 9351255950 | उदयपुर |
| विधि | CS,BBA | HDFC Bank | 12.9.98 | - | देवतवाल | बनावडिया | खटोड़ | करोड़ीवाल | 9314381123 | उदयपुर |
| रूपनन्दनी | B.Com, MBA | Pvt. Job. | 26.10.97 | 5’0’’ | मेरावण्डिया | जालवार | हिदाध | बबेरीवाल | 9336909727 | – |
| नेहा | M.A., B.Ed. | - | 1.8.96 | 5’2’’ | भोरोदिया | घोड़ेला | कटबरा | कोलकरिया | 9521462151 | चाकसू |
| किरन | B.Sc. MBA | Hospital | 18.3.86 | 5’2’’ | गढ़वाल | दोबलदिया | छापरवाल | किरोड़ीवाल | 8005957228 | जयपुर |
| दिव्या | M.Com. | - | 16.5.96 | 5’6’’ | बारावाल | कुदाल | सिरोहिया | किरोड़ीवाल | 9929713051 | – |
| रीना | M.A. ITI | Web disigner | 15.11.92 | 5’1’’ | दम्बीवाल | बड़ीवाल | पीपलोदा | मारवाल | 9414638298 | जयपुर |
| प्रियांशी | M.Com. | Teacher | 13.12.99 | 5’2’’ | बालोदिया | मारवाल | धुंधारिया | बड़ीवाल | 9351546014 | जयपुर |
| रविना | M.Com. RSCIT | Pvt. | 12.1.97 | 5’3’’ | मारवाल | वनावड़िया | भडानिया | राहोरिया | 9887261651 | जयपुर |
| उन्नती | B.Tech. (EE) | Pvt. Ltd. Company | 25.2.96 | 5’2’’ | नागौरा | घोड़ेला | अनावड़िया | जलान्दरा | 9785919222 | अलवर |
| सीमा | M.A. | - | 14.3.2001 | 5’6’’ | घोड़ेला | मोरवाल | रेवाड़िया | कारगवाल | 9875247635 | भीलवाड़ा |
| सुरभी | B.Com., MBA | HR Manager | 17.12.92 | 5’4’’ | जूनवाल | दोराया | सिरस्वा | खरगटा | 9414045277 | जयपुर |
| गायत्री(मांगलिक) | Post Graduate | BOB | 20.10.99 | 5’3’’ | लिम्बा | राजोरिया | कुसुम्बीवाल | मुण्डिया | 9414424759 | नागौर |
| लीला(मांगलिक) | M.A. (1st yr.) | - | 12.2.2000 | 5’4’’ | जालवाल | कुंडलवाल | सिरस्वा | मडोखा | 9251560560 | ब्यावर |
| श्रद्धा | BA, Diploma & RSCIT | - | 18.2.90 | 5’2’’ | बासनीवाल | घोड़ेला | तांगड़ा | जलान्दरा | 9828501055 | जयपुर |
| आंचल | LLM | - | 28.10.94 | 5’3’’ | नेमीवाल | घोड़ेला | तूंदवाल | सिरस्वा | 8619877659 | सीकर |
| योगिता | M.A. | - | 2.10.94 | 5’8’’ | बड़ीवाल | राजोरिया | तूंदवाल | खोवाल | 9509022202 | जयपुर |
| मनाली | M.Sc. (Nursing) | Nursing officer Bhopal | 25.5.96 | 163सेमी. | नागा | मारवाल | मारोठिया | बबेरीवाल | 9414553486 | स.माधोपुर |

**नोट :** 1. यदि आप अपनों की वैवाहिक जानकारी नि:शुल्क प्रकाशित कराना चाहते हैं तो उक्त कॉलम के अनुसार कार्यालय को जानकारी प्रेषित करें।

2. प्रदत्त सूचना के आधार पर यदि आपके किसी अपने का सम्बन्ध हो जाये तो कृपया 'कुमावत इंडिया' पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।

3. उपरोक्त वैवाहिक बायोडाटा की जानकारी व्यक्तिगत, विभिन्न वैवाहिक ग्रुप एवं मीडिया के द्वारा प्राप्त हुई है।

## पोस्टकार्ड से भी कम कीमत पर आपका संदेश, विज्ञापन समस्त भारत में पहुँचाने का एकमात्र सशक्त माध्यम "कुमावत इंडिया पत्रिका"

समाज बन्धुओं से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशन हेतु यदि आप प्रकाशन सामग्री:- समाचार, फोटो, लेख, कविता, प्रतिभाओं का परिचय, सामाजिक गतिविधियों, जनउपयोगी सूचना आदि प्रकाशित करवाना चाहते हैं तो कृपया kumawatindiapatrika@gmail.com पर मेल करें अथवा कार्यालय पते पर सामग्री प्रेषित करें।

-सम्पादक

### आवश्यक सूचना

पत्रिकाएं नियमित रूप से हर माह की 25 तारीख को जयपुर से निर्धारित डाकघर में भेज दी जाती हैं। यदि किसी सदस्य को एक सप्ताह के अन्दर पत्रिका नहीं मिलती है तो आप अपने पोस्टमैन व पोस्ट मास्टर से शिकायत करें एवं हमें भी सूचित करें।

**'कुमावत इंडिया' पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के तथ्य, आंकड़े व विचार लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं तथा इसकी मौलिकता व सत्यता के लिए सम्पादक मण्डल, पत्रिका, प्रकाशक एवं ट्रस्ट विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं है।**

■ किसी भी लेखन सामग्री या उसके किसी भाग के लिए प्रकाशन से 2 माह बाद कोई आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी।

**समस्त विवादों के लिए न्यायिक क्षेत्र जयपुर होगा।**

### पूर्वजों की याद को संजोये रखे

'कुमावत इण्डिया' पत्रिका ने यह सुविधा दी है, समाज बन्धु अपने पूर्वज ( माता-पिता, दादा-दादीजी, नाना-नानी आदि ) की पुण्य तिथि 1/8 पेज में मल्टीकलर में फोटो सहित, शुल्क 500 रुपए एक बारीय अथवा 4000 रु. जमा कराकर 10 वर्ष तक प्रकाशित करा सकते हैं। - सचिव

**पता बदलने तथा पत्रिका नहीं मिलने पर मो. 9414554322 पर नया पता पिन कोड सहित व्हाट्सएप करें।**

### -: विशेष निवेदन :-

1. **शोक समाचार, तीये की बैठक के समाचारों में नाम के साथ 'कुमावत' अवश्य लगाएं। क्योंकि समान गोत्र अन्य समाजों में भी मिलते हैं।**
2. **इस पत्रिका में हाल ही में दिवंगत हुए समाजजनों की श्रद्धांजलि एक लाईन में निःशुल्क प्रकाशित की जाती है। इस हेतु पत्रिका को सूचित करने का कष्ट करें।**

### सदस्यता समाप्ति सूचना

3 वर्षीय सदस्यता वाले सदस्यों को सूचित किया जाता है कि उसकी सदस्यता समाप्त हो गई। कृपया शीघ्र नवीनीकरण करावें।

सामाजिक संस्थाओं व ट्रस्टों को विज्ञापन में 10 प्रतिशत की छूट।

## 'कुमावत इंडिया' पत्रिका नहीं मिलने पर यहां सम्पर्क करें

डाक विभाग एवं अन्य के कारणों से आपको पत्रिका नहीं मिलती है तो कृपया अपने नजदीक सेन्टर पर जाकर प्राप्त करने का कष्ट करें तथा कृपया पत्रिका कार्यालय को पत्र, पोस्ट कार्ड आदि द्वारा सूचित करने का कष्ट करें।

**जयपुर :**

1. **लालकोठी बापूनगर**-श्री सुरेन्द्र नागा, सिवाड़ एरिया, बापूनगर, मो. 9414994006
2. **शिल्प कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री महेश जलान्धरा मो. 9509344684
3. **कुमावत कॉलोनी, झोटवाड़ा**- श्री सुरेन्द्र मारोठिया मो. 9314820385
4. **जयपुर शहर**-श्री राजसिंह बधानियां, म.नं. 454, मिश्र राजाजी का रास्ता, मो. 9414238799
5. **सांगानेर**-श्री भीमसिंह सिरोहिया, मालपुरा गेट मो. 9414359364
6. **मालवीय नगर**-श्री लक्ष्मीनारायण घोड़ीवाल, 7/218, मालवीय नगर, जयपुर मो. 9549656438
7. **22 गोदाम**-श्री चेतन बालोदिया, राज ब्लॉक, बी-81, रोड नं. 4 मो. 9414052736
8. **आदर्श नगर, तिलक नगर**-श्री शैलेन्द्र खड़गटा, खड़गटा भवन, मोती डूंगरी, जयपुर मो. 9351682036
9. **दहमी कलां, बगरू**-श्री चेनसुख बड़ीवाल, ग्लोबल एकाउन्ट सर्विस दहमी कलां बालाजी स्टेण्ड मो. 9929012987
10. **करधनी-कालवाड़ रोड**-श्री गणेश राम मारवाल, मै. जयश्री राम हार्डवेयर एण्ड पावर टूल्स टिम्बर दुकान नं. 90-91, करधनी शॉपिंग सेन्टर 9 दुकान कालवाड रोड, मो. 9828063267
11. **टोंक फाटक**- गणपति आर्ट एण्ड फ्रेम, 26 आदर्श बस्ती, मो. 8058157147
12. **बरकत नगर-महेश नगर**-श्री विशाल कम्प्यूटर्स, बरकत नगर महेश नगर फाटक के पास, जयपुर, मो. 94613-43432
13. **ब्यावर**-श्री नरेन्द्र आर्य, मो. 8107944493
14. **दिल्ली**-श्री राधेश्याम घासोलिया, मो. 9818711580
15. **फुलेरा**-श्री सुरेश नागा, जगदम्बा प्रिंटिंग प्रेस, बस स्टेण्ड के पास
16. **सोडाला** -घनश्याम फोटो लेमिनेशन एण्ड फ्रेमिंग, 31, कुमावत कॉलोनी, मो.9352070394

रजि. नं- COOP/2018/JAIPUR/101895
12AA
80 G

# स्वामिनी सेवा संस्था

## प्रथम सर्वसमाज सामूहिक विवाह सम्मेलन

**वर पक्ष**
सहयोग राशि
रू 11000/-

**रामनवमी**
17 अप्रेल 2024
( बुधवार )

**वधु पक्ष**
सहयोग राशि
रू 11000/-

**घर जैसा**

**सामूहिक विवाह सम्मेलन जयपुर में आयोजित किया जाएगा**

• सोने का मंगल सूत्र • सोने की लोंग • चाँदी की पाईजेब जौड़ी •चाँदी की चीटकीयां •चाँदी की अंगुठी •बैड बोक्स वाला •गद्दा • दो तकिया • कम्बल • बैडशीट• बाटी ओवन •दो तकिया कवर •ड्रेसिंग टेबल • चोकि • दो कुर्सीया •अलमारी• प्रेस • पंखा •दीवार घड़ी •हाथ घड़ी (वर एवं वधु) • शादी का बैस ( वधु )• सफारी सूट का कपड़ा ( वर ) •एक जोड़ी चप्पल ( वधु )• 21 बर्तन •वरमाला• टिफिन सेट •तोरण थाम आदी

**पंजीकरण हेतु आवश्यक दस्तावेजः-**

- वर-वधु और माता-पिता के आधार कार्ड की 4-4 कॉपी।
- वधु की बैंक पास-बुक और राशन कार्ड या जनआधार कार्ड।
- वर-वधु की 4-4 फोटो, माता-पिता की 2-2 फोटो।
- वर-वधु की 8 वीं या 10 वीं की मार्कशीट य जन्म प्रमाण पत्र।
- वर-वधु का शपथ पत्र देना होगा।

**पंजीकरण कार्यालय**

**मुख्य कार्यालय** – 31 कुमावत कॉलोनी, कुमावत स्कूल के पीछे, सोडाला, जयपुर-302006
**अशोक कुमावत**, मों:- 9352070394, **गोविंद वर्मा (कुमावत)** मों:- 9001905456
**गुरुदयाल वर्मा**, मो:-9314246781 , **महेंद्र कुमावत**, मो:- 9460071867

**उप कार्यालय** – **गौकलेंद्र गौड़ (गोकुल)** 14 गंगा विहार कॉलोनी अजमेर रोड़ बगरू, जयपुर- 303007
मों-9887057636

**उप कार्यालय** – **सुरज्ञान लाल कुमावत**,वाया-जाहोता, कुम्हारो की ढाणी,आछोजाई,चतरपुरा, जयपुर( राज )303701 मों: 9602497509

**उप कार्यालय** – **श्री नवदुर्गा बिल्डिंग मैटेरियल**, श्री नारायण विहार, छापोलो की ढाणी के पास ,मुहाना मोड़ सांगानेर
**बेनी कुमावत**, मों: 9782326509, **जितेन्द्र कुमावत**, मों: 9950988523

**उप कार्यालय** – **हरी किशन जी माली** , सैनी काम्पलेक्स, रामपुरा रोड़, फागी, जयपुर-303005
मों: 9414704438

वैवाहिक जोड़ो के पंजीकरण चालू है। अन्तिम दिनांक 31 मार्च 2024

**होली की शुभकामनाओं सहित**

# CMT ARTS INDIA PVT LTD.

MANUFACTURER, EXPORTER, IMPORTER & WHOLESALER OF
*All kind of* : HANDICRAFT, GIFT AND SOUVENIR

*Since 1976*

Director
Mukesh Kumawat
93146-07695

Managing Director
C.M. Kumawat
98290-56063

Director
Lokesh Kumawat
97837-83123

**Showroom :**
"Sai-Villa", Plot No. 39, Mission Compound,
C-Scheme, Near Ajmer Puliya (Bridge)
Jaipur 302 001 (Raj.) Tel: +91-141-4041561

**Residence :**
F-31/A, Lal Bhadhur Nagar (W),
S.L. Marg, Main Road, Durgapura,
Tonk Road, Jaipur - 302018 (Raj.)

Email: cmtartsindia@gmail.com
Website : www.sandalwood.cn.com

Speciality :
1. Cedar Wood/ Kadamba wood with fine carving and half antique.
2. Sandalwood artifacts 3. Brass metal with turquoise work and Antique finish
4. Marble with painted & embossed art 5. Cultured marble 6. Soft stone 7. Miniature Art

हमारी प्रिय

**शोभिका कुमावत** (Sweety)

पत्नी श्री मनीष कुमावत द्वारा

***Numerology***

तथा

***Traditional & Holy fire***
***Raiki Level 3 Masters Degree***

सफलता पूर्वक करने पर

## हार्दिक बधाई

**शुभेच्छु**

श्रीमती फूला देवी-स्व. रामदयाल गेदर ( दादी-दादा )
श्रीमती अमिता-रमेश कुमावत ( माता-पिता )
श्रीमती नमिता-दिनेश एवं श्रीमती अंजना-सतीश ( चाची-चाचा )
श्रीमती मेघावी-पारितोष ( भाभी-भाई ), अव्यान ( भतीजा )
हिमांशु, चारू, जषिथ ( भाई-बहिन ) एवं समस्त गेदर परिवार

**E-45AB, गार्डन स्ट्रीट, 3rd एवेन्यु, लालबहादुर नगर-प., दुर्गापुरा, जयपुर, मो. : 9414554322**

# श्रीमती सरन देवी

धर्मपत्नी स्व. श्री आनन्दी लाल वर्मा ( लखेसरा )
की प्रथम पुण्य तिथि 15 मार्च, 2024
पर अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं

**श्रद्धान्वत**

बसंत-एन.पी. वर्मा से.नि. वरिष्ठ भूजल वैज्ञानिक ( पुत्रवधु-पुत्र ), विमला-प्रेमचंद जी ( पुत्री-दामाद ), शिवानी-मधुर ( पौत्रवधु-पौत्र ), ऋतु-सुरेश, कविता-नरेश, कुसुम-निशांत ( पौत्री-पौत्री दामाद ), निर्विता ( पड़पौत्री ) एवं लखेसरा ( कुमावत ) परिवार

**एफ-24, 4th एवेन्यू, लालबहादुर नगर-प., जे एल एन मार्ग, जयपुर मो. : 9414238619, 9662038662**

---

21.09.1948 से 18.04.2014
( वैशाख कृष्णा चतुर्थी संवत 2071 )

दसवीं पुण्य तिथि 18 अप्रैल 2024

## स्वर्गीय श्रीमती दुर्गा देवी कुमावत

धर्मपत्नी ओम प्रकाश कुमावत ( छापोली वाले )
( सेवा निवृत वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी,भारत सरकार )

आपकी सहृदयी जीवन की स्मृतियां हमारी अक्षुण धरोहर है, सभी परिवार जन सजल नयनों से सहृदय श्रद्धा सुमन अर्पित करते हैं।

**श्रद्धान्वत**

पुत्र-पुत्रवधू : आशुतोष-मिताली(सुपुत्री श्रीमती दमयंती महेश जी कुदाल,जयपुर), पौत्र : युवराज (प्रिंस), सात्विक(मनु), पुत्री-दामाद : अनीता(नीतू)-श्री अनिरुद्ध नोखवाल, जयपुर, अरुणा(पप्पी)-श्री पवन मंडोरिया,कोटा, दोहिते : सुधांशु नोखवाल(कानु), हेरंब मंडोरिया (हनु), परिवार पक्ष : महावीर प्रसाद एवं समस्त कोलूगरिया परिवार पीहर पक्ष : रामगोपाल वर्मा एवं समस्त नीमीवाल परिवार व

**पता : 86/176, कुंभा मार्ग, प्रताप नगर हाउसिंग बोर्ड, सांगानेर, जयपुर-302033**
**मोबाइल : 9829015163, 9958006366,7728909266**

---

स्व. 21.03.2009
15वीं पुण्यतिथि
21.03.2024

स्व. 02.11.2006
18वीं पुण्यतिथि
02.11.2024

## स्व. श्री कन्हैयालाल जी स्व. श्रीमती जमना देवी

हम सब परिवारजन अश्रुपुरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्रृद्धान्वत :
पुत्र - पुत्रवधु : रामकुमार बिरथलिया - भौंरीदेवी ( से.नि. मैने, पी.एन.बी. )
पौत्र - पौत्रवधु : पूनम - महेन्द्र कुमावत, सी.ए.सी.एस., आस्ट्रेलिया
नीलम ( मोना ) - दीपेन्द्र कुमावत, सी.ए. आस्ट्रेलिया
पौत्री - पौत्री दामाद : मंजू - इंजि., संजय गोयल ( गोल्या )
पड़पौत्री : रूसवी, आहना,
पड़पौत्र : मेधिर, यूवल

निवास : बी-186, वैशाली नगर, जयपुर - 302021

---

स्व. 13.04.2015

नवम पुण्यतिथि 13.04.2024

## स्व. श्रीमती परवेश कुमावत (गैदर)

धर्मपत्नी श्री कृष्ण गोपाल कुमावत ( के.जी. रेडियो )

हम सब परिवारजन सजल नयनों से सहृदय श्रद्धा सुमनांजलि अर्पित करते हैं।

आपका स्नेह, ईश्वर भक्ति, सद्व्यवहार, सेवाभावना एवं प्रेरणादायक जीवन सदैव मार्गदर्शन करता रहेगा।

**श्रृद्धान्वत:**

पुत्र-पुत्रवधु : राजसिंह - संतोष, हेमेन्द्र सिंह-दीपाली
पुत्री-दामाद : उषा -सतीश भेड़ीवाल, शालिनी-नेमीचन्द मारोठिया
पौत्र : उत्कर्ष, हर्षवर्धन, हार्दिक
पौत्री : फणिन्द्रा, रूपल एवं समस्त गैदर परिवार

बी-14, मधुबन कॉलोनी, किसान मार्ग, टोंक रोड, जयपुर मो. 9468900276

---

स्व. 19.03.2016

अष्टम पुण्यतिथि
19 मार्च, 2024

## स्व. श्रीमती आशा देवी कुमावत

( पूर्व अध्यक्षा - भारतीय कुमावत क्षत्रिय महासभा ईकाई - सांगानेर )

( धर्मपत्नि सोहन लाल अजमेरा )

आपकी सादगी, आदर्श एवं त्यागमय जीवन हमारे लिए सदैव प्रेरणा स्त्रोत बने रहेंगे।
आज हम सभी परिवारजन अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

**श्रृद्धान्वत:**

सोहन लाल कुमावत ( एडवोकेट ) पति, अजय-पूनम ( पुत्र-पुत्रवधु ) कार्तिकेय-परिधि ( पौत्र -पौत्री ) संग्राम सिंह-ममता, दीपा-बृजेश कुमार मीनाक्षी-राजकुमार ( दामाद-पुत्रियां )

**बाजगी तलाई, वार्ड नं. 97 (New), सांगानेर, जयपुर मो. 9636860812**

---

स्व. 7.10.1993

स्व. 9.4.1999

## स्व. श्री भौंरीलाल धुंधारिया स्व. श्रीमती भंवरी देवी

31वीं पुण्यतिथि 7.10.2024 25वीं पुण्यतिथि 9.4.2024

श्रद्धावन्त :

पुत्र-पुत्रवधु : लालचंद-विमला, सुरेश-अनिता,
पुत्री-दामाद : डॉ. नेमीचन्द घोड़ेला-रूकमणी, मोहनलाल रेणीवाल-शान्ती,
प्रेमनारायण घोड़ेला-इन्दिरा, पौत्र-पौत्रवधु : आदित्य-नेहा, राहुल, नीरज,
दोहित्र-दोहित्र वधु : मोहनलाल घोड़ेला-सुनीता, नवीन घोड़ेला-लक्ष्मी,
कृष्ण गोपाल रेणीवाल-श्रुती, कमल किशोर रेणीवाल-पिंकी, रवि रेणीवाल-रजनी
पवन घोड़ेला-मधु, दोहिती-दामाद : चन्द्रकान्ता- नरेन्द्र आसीवाल

बी-137 -बी, आनंदपुरी, मोती डूंगरी रोड, जयपुर मो. 9413335998
27 शिव विहार, पांच्यावाला, महाराणा प्रताप रोड, जयपुर मो. 7219924079

**गायक कलाकार :**

मोहन कुमार बालोदिया, नागेश भटनागर, राजीव माथुर, संजय भटनागर, के.के. मीणा, रश्मि बालोदिया, मनीषा बालोदिया, बेला माथुर, विधि आचार्य, निकिता कोका लालवाणी, गणेश सुथार और सतीश शर्मा

**कुमावत समाज के सहयोगकर्ता :**

श्री चेतन धुंधारिया जिलाध्यक्ष भाजपा ओबीसी मोर्चा, जयपुर शहर, श्री भागचन्द बैरा समाजसेवी, 'कुमावत इंडिया' पत्रिका, मनोज कुमावत ग्लोबल अर्थ इंजीनियरिंग सर्विसेज प्रा.लि., राज ब्लॉक्स, आर्टिस्ट माधव बालोदिया इत्यादि

# SP CONSTRUCTION

## Building INDIA'S Construction

**SHASHI PAL KUMAWAT**

B-34, Devi Chiranjivi Colony, Surya Nagar, Gopal Pura Bye Pass, Jaipur 302015

Web: spconst.co.in    E-Mail: info@spconst.co.in

# Shubh Laxmi Crane & Engineers

(Formally Know as Shri Laxmi Crane Service )

All India Equipments Rental Service Provider

**Jai Kishan Kumawat**
+91- 9829125428
+91- 9887011175

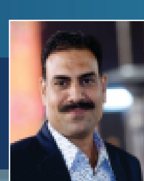

**Shankar Lal Kumawat**
+91- 9887227775

**Mukesh Kumar Kumawat**
+91- 9887337775

**H.O.**
Shree Heera Bhawan, Dholi Mandi
Chomu-303702 Distt. Jaipur (Rajasthan)

**B.O.**
Near Patwar Bhawan,Village - Kawas
Distt. Barmer - 344035 (Rajasthan)

shreelaxmicranes@gmail.com
shubhlaxmicrane@gmail.com

www : shrilaxmicrane.com

Graphic By : Art point # 9928064300



RNI - RAJHIN/2017/74285

प्रेषक: कुमावत इंडिया पत्रिका
एफ 31/ए, एस. एल. मार्ग,
लाल बहादुर नगर-प., दुर्गापुरा, जयपुर - 302018